दशम माला, खंड 47, अंक 1

सोमवार, 26 फरवरी, 1996
7 फाल्गुन, 1917 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी संस्करण

सोलहवां - सत्र

(दसवीं लोक सभा)

(खंड 47 में अंक 1 से 10 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली

मूल्य : पचास रुपये

दिनांक 26 फरवरी, 1996 के लोक सभा
वाद-विवाद (हिन्दी संस्करण) का शुद्धि-पत्र

कालम	पंक्ति	के स्थान पर	पढ़िए
(ii) बायें	14	श्री रामकृष्ण कोंताला (अनेकापल्ली)	श्री रामकृष्ण कोंताला (अनकापल्ली)
(ii) दायें	9	श्री एन॰डेनिस (नागरकोइल)	श्री एन॰डेनिस (नगरकोइल)
(iii) दाएं	नीचे से 5	श्री बापूसाहिब थिटे (बारामती)	श्री बापूसाहिब थिटे (बारामती)
(iv) बाएं	2	श्री दलबीर सिंह (शहडोल)	श्री दलबीर सिंह (शाहडोल)
(iv) बाएं	16	श्री अन्नतराव देशमुख (वाशिम)	श्री अनन्तराव देशमुख (वाशिम)
(iv) बाएं	17	श्री अशोक आन्नदराव देशमुख (परभनी)	श्री अशोक आनन्दराव देशमुख (परभनी)
(v) बाएं	5	श्री छेदी पासवान, पासवान (सासाराम) में पहले आए पासवान का लोप करें ।	
(v) बाएं	नीचे से 6	श्री पाडुरंग पुंडलिक, फुंडकर (अकोला)	श्री पांडुरंग पुंडलिक फुंडकर (अकोला)
(v) दाएं	8	श्री बीरबल (श्रीगंगानगर)	श्री बीरबल (गंगानगर)
(vi) दाएं	3	श्री पाला के॰एम॰मैथ्यू (इदुक्की)	श्री पाला के॰एम॰मैथ्यू (इदुक्की)
(vii) बाएं	10	श्री राजगोपाल नायडुरामसामी (पेरियाकुलम)	श्री राजगोपाल नायडु रामासामी (पेरियाकुलम)
(vii) दाएं	12	श्री एस॰एम॰लालजान वाशा (गुन्टूर)	श्री एस॰एम॰लालजान बाशा (गुन्टूर)
(vii) दाएं	नीचे से 5	मेजर आर॰जी॰विलियम्स (नामनिर्देशित आंग्ल भारतीय)	मेजर जनरल आर॰जी॰विलियम्स (नामनिर्देशित आंग्ल भारतीय)
(vii) दाएं	नीचे से 2	श्री शिवलाल नागजी भाई वेकरिया (राजकोट)	श्री शिवलाल नागजी भाई वेकारिया (राजकोट)
(ii) दाएं	नीचे से 7	श्री शिवेन्द्र बहादुर सिंह (राजनदगांव)	श्री शिवेन्द्र बहादुर सिंह (राजनंदगांव)
(x) बाएं	6	शहाबुद्दीन सैयद (किशनगंज)	श्री शहाबुद्दीन सैयद (किशनगंज)
(ii) दाएं	5	श्री सैयद सिब्ते रजी	श्री सैयद सिब्ते रज़ी

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा।)

विषय-सूची

दशम माला, खंड 47, सोलहवां सत्र, 1996/1917 (शक)

अंक 1, सोमवार, 26 फरवरी, 1996/7 फाल्गुन, 1917 (शक)

विषय	कालम
सदस्यों की वर्णानुक्रमानुसार सूची – दसवीं लोक सभा	(i)-(ix)
लोक सभा के अधिकारी	(ix)
मंत्रि-परिषद	(ix)-(xii)
राष्ट्रगान	1
राष्ट्रपति का अभिभाषण	1-8
निधन संबंधी उल्लेख	8-22
डबवाली त्रासदी के संबंध में उल्लेख	23
सदस्यों द्वारा त्यागपत्र	23-24

दसवीं लोक सभा के सदस्यों की वर्णाक्रमानुसार सूची

अ

अंजलोज, श्री थाइल जान (अलेप्पी)

अंसारी, डा. मुमताज (कोडरमा)

अकबर पाशा, श्री बी. (वेल्लौर)

अग्निहोत्री, श्री राजेन्द्र (झांसी)

अजित सिंह, श्री (बागपत)

अडईकलराज, श्री एल. (तिरुचिरापल्ली)

अन्तुले, श्री ए.आर. (कोलाबा)

अन्बारासु, श्री आर. (मद्रास मध्य)

अनवर, श्रीमती के. पद्मश्री (नेल्लौर)

अमरपाल सिंह, श्री (मेरठ)

अब्दुल गफूर, श्री (गोपालगंज)

अयूब खां, श्री (झुंझुनु)

अय्यर, श्री मणि शंकर (मईलादुतुराई)

अरुणाचलम, श्री एम. (टेन्कासी)

अवैद्य नाथ, महन्त (गोरखपुर)

अशोकराज, श्री ए. (पैरम्बलूर)

अर्स, श्रीमती चन्द्रप्रभा (मैसूर)

अहमद, श्री ई. (मंजेरी)

अहमद, श्री कमालुद्दीन (हनमकोण्डा)

अहिरवार, श्री आनन्द (सागर)

आ

आचार्य, श्री बसुदेव (बांकुरा)

आजम, डा. फैयाजुल (बेतिया)

आदित्यन, श्री आर. धनुषकोडी (तिरुवेन्दूर)

इ

इन्द्र जीत, श्री (दार्जिलिंग)

इम्चालम्बा, श्री (नागालैण्ड)

ईरानी, श्रीमती शीला एफ. (नामनिर्देशित आंग्ल भारतीय)

इस्लाम, श्री नुरुल (धूबरी)

उ

उन्नीकृष्णन्, श्री के.पी. (बडागरा)

उपाध्याय, श्री स्वरूप (तेजपुर)

उमराव सिंह, श्री (जालंधर)

उमा भारती, कुमारी (खजुराहो)

उम्ब्रे, श्री लाईता (अरुणाचल पूर्वी)

उम्मा रेड्डी वेंकटस्वरलु, प्रो. (तेनाली)

उरांव, श्री ललित (लोहरदगा)

ओ

ओडेयार, श्री चनैया (दावणगेरे)

ओवेसी, श्री सुल्तान सलाउद्दीन (हैदराबाद)

क

कटियार, श्री विनय (फैजाबाद)

कठेरिया, श्री प्रभूदयाल (फिरोजाबाद)

कनौजिया, डा. जी.एल. (खीरी)

कनोडिया, श्री महेश (पाटन)

कमल नाथ, श्री (छिन्दवाड़ा)

कमल, श्री श्याम लाल (बस्ती)

करेद्दुला, श्रीमती कमला कुमारी (भद्राचलम)

कहांडोले, श्री जेड.एम. (मालेगांव)

कांशीराम, श्री (इटावा)

कापसे, श्री राम (ठाणे)

कामत, श्री गुरुदास (मुम्बई उत्तर पूर्व)

कामसन, प्रो. एम. (बाह्य मणिपुर)

काम्बले, श्री अरविंद तुलशीराम (उस्मानाबाद)

कालकादास, श्री (करोलबाग)

कालियापेरुमल, श्री पी.पी. (कुड्डालोर)

काले, श्री शंकर राव दे. (कोपरगांव)

कस्वां, श्री राम सिंह (चुरू)

कासु, श्री वेंकट कृष्ण रेड्डी (नरसारावपेट)

कुन्जी लाल, श्री (सवाई माधोपुर)

कुप्पुस्वामी, श्री सी.के. (कोयम्बटूर)

कुमार, श्री नीतीश (बाढ़)

कुमार, श्री वी. धनंजय (मंगलौर)

कुमारमंगलम, श्री रंगराजन (सलेम)

कुमारासामी, श्री पी. (पलानी)

कुरियन, प्रो. पी.जे. (मवेलीकारा)

कुली, श्री बालिन (लखीमपुर)

कुसमरिया, डा. रामकृष्ण (दमोह)

कृष्ण कुमार, श्री एस. (क्विलोन)

कृष्ण स्वामी, श्री एम. (वन्डावाशी)

कृष्णेन्द्र कौर (दीपा), श्रीमती (भरतपुर)

केवल सिंह, श्री (भटिंडा)

केशरी लाल, श्री (घाटमपुर)

कैनिथी, डा. विश्वनाथम (श्रीकाकुलम)

कैरों, श्री सुरेन्द्र सिंह (तरन तारन)

कोटला, श्री जय सूर्यप्रकाश रेड्डी (कुरनूल)

कोंताला, श्री रामकृष्ण (अनेकापल्ली)

कोली, श्री गंगा राम (ब्याना)

क्षीरसागर, श्रीमती केसरबाई सोनाजी (बीड)

ख

खन्ना, श्री राजेश (नई दिल्ली)

खनोरिया, मेजर डी.डी. (कांगड़ा)

खन्डूरी, मेजर जनरल (रिटायर्ड) भुवन चन्द्र (गढ़वाल)

खां, श्री असलम शेर (बेतुल)

खां, श्री गुलाम मोहम्मद (मुरादाबाद)

खां, श्री सुखेन्दु (विष्णुपुर)

खुर्शीद, श्री सलमान (फर्रुखाबाद)

ग

गंगवार, डा. परशुराम (पीलीभीत)

गंगवार, श्री संतोष कुमार (बरेली)

गगोई, श्री तरुण (कलियाबोर)

गजपति, श्री गोपीनाथ (बरहामपुर)

गहलोत, श्री अशोक (जोधपुर)

गामीत, श्री छीतूभाई (माण्डवी)

गायकवाड, श्री उदयसिंह राव (कोल्हापुर)

गालिब, श्री गुर चरण सिंह (लुधियाना)

गावीत, श्री माणिकराव होडल्या (नन्दरबार)

गिरि, श्री सुधीर (कन्टाई)

गिरिजा देवी, श्रीमती (महाराजगज)

गिरियप्पा, श्री सी.पी. मुडला (चित्रदुर्ग)

गुंडेवार, श्री विलासराव नागनाथराव (हिंगोली)

गुप्त, श्री इन्द्रजीत (मिदनापुर)

गोपालन, श्रीमती सुशीला (चिरायिंकिल)

गमांग, श्री गिरिधर (कोरापुट)

गोहिल, डा. महावीर सिंह हरिसिंहजी (भावनगर)

गौडा, प्रो के वेंकटगिरि (बगलौर दक्षिण)

गौतम, श्री शीला (अलीगढ)

घ

घंगारे, श्री रामचन्द्र मरोतराव (वर्धा)

घाटोवार, श्री पवन सिंह (डिब्रूगढ़)

च

चक्रवर्ती, प्रो. सुशान्त (हावड़ा)

चटर्जी, श्री निर्मल कान्ति (दमदम)

चटर्जी, श्री सोमनाथ (बोलपुर)

चन्द्रशेखर, श्री (बलिया)

चन्द्रशेखर, श्रीमती मारगथम (श्री पेरुम्बुदूर)

चव्हाण, श्री पृथ्वीराज डी. (कराड)

चाको, श्री पी.सी (त्रिचूर)

चार्ल्स, श्री ए. (त्रिवेन्द्रम)

चालिहा, श्री किरिप (गुवाहाटी)

चावड़ा, श्री ईश्वरभाई खोडाभाई (आनन्द)

चावड़ा, श्री हरिसिंह (बनासकांठा)

चिखलिया, श्रीमती भावना (जूनागढ़)

चिदम्बरम, श्री पी. (शिवगंगा)

चिन्ता मोहन, डा. (तिरुपति)

चेन्नित्तला, श्री रमेश (कोट्टायम)

चौधरी, श्री ए.बी.ए. गनी खां (माल्दा)

चौधरी, स्क्वैड्रन लीडर कमल (होशियारपुर)

चौधरी, डा. के.वी.आर. (राजामुन्दरी)

चौधरी, श्री नारायण सिंह (हिसार)

चौधरी, श्री पंकज (महाराजगंज)

चौधरी, श्री राम टहल (रांची)

चौधरी, श्री रुद्रसेन (बहराइच)

चौधरी, श्री लोकनाथ (जगतसिंहपुर)

चौधरी, श्रीमती सतोष (फिल्लौर)

चौधरी, श्री सैफुद्दीन (कटवा)

चौरे, श्री बापू हरि (धूले)

चौहान, श्री चेतन पी.एस. (अमरोहा)

चौहान, श्री शिवराज सिंह (विदिशा)

छ

छटवाल, श्री सरताज सिंह (होशंगाबाद)

ज

जंगबीर सिंह, श्री (भिवानी)

जटिया, डा. सत्यनारायण (उज्जैन)

जनार्दनन, श्री एम.आर. कादम्बूर (तिरुनेलवेली)

जय प्रकाश, श्री (हरदोई)

जगमोहन, श्री ए. (तिरुपत्तूर)

जसवन्त सिंह, श्री (चित्तौड़गढ़)

जांगड़े, श्री खेलन राम (बिलासपुर)

जाखड़, श्री बलराम (सीकर)

जाटव, श्री बारे लाल (मुरैना)

जाफर शरीफ, श्री सी.के. (बंगलौर उत्तर)

जावाली, डा. बी.जी. (गुलबर्गा)

जायनल अबेदिन, श्री (जंगीपुर)

जीवरत्नम, श्री आर. (अराकोनम)

जेना, श्री श्रीकान्त (कटक)

जेस्वाणी, डा. खुशीराम डुंगरोमल (खेड़ा)

जोशी, श्री अन्ना (पुणे)

जोशी, श्री दाऊ दयाल (कोटा)

झ

झा, श्री भोगेन्द्र (मधुबनी)

झिकराम, श्री मोहनलाल (मांडला)

ट

टंडेल, श्री डी.जे. (दमन और दीव)

टाइटलर, श्री जगदीश (दिल्ली सदर)

टिंडिवनाम, श्री के. राममूर्ति (टिंडिवनाम)

टोपीवाला, श्रीमती दीपिका एच. (बड़ौदा)

टोपे, श्री अंकुशराव (जालना)

ठाकुर, श्री गाभाजी मंगाजी (कपड़बंज)

ड

डामोर, श्री सोमजीभाई (दोहद)

डेनिस, श्री एन. (नागरकोइल)

डेका, श्री प्रबीन (मंगलदाई)

डेलकर, श्री मोहन एस. (दादरा और नगर हवेली)

डोम, डा. राम चन्द्र (बीरभुम)

त

तग्काबालु, श्री के.वी. (धर्मपुरी)

तारा सिंह, श्री (कुरुक्षेत्र)

तिरिया, कुमारी सुशीला (मयूरभंज)

तीरकी, श्री पीयूष (अलीपुरद्वार)

तेजनारायण सिंह, श्री (बक्सर)

तोपदार, श्री तरित वरण (बैरकपुर)

तोपनो, कुमारी फ्रिडा (सुन्दरगढ़)

तोमर, डा. रमेश चन्द (हापुड़)

त्रिपाठी, श्री प्रकाश नारायण (बांदा)

त्रिपाठी, श्री ब्रज किशोर (पुरी)

त्रिपाठी, श्री लक्ष्मीनारायण मणि (केसरगंज)

त्रिवेदी, श्री अरविंद (साबरकांठा)

थ

थामस, प्रो. के.वी. (एरणाकुलम)

थामस, श्री पी.सी. (मुक्तुपुजा)

थिंटे, श्री बापूसाहिब (बारामती)

थुंगन, श्री पी.के. (अरुणाचल पश्चिम)

थोरात, श्री संदीपन भगवान (पंढरपुर)

द

दत्त, श्री अमल (डायमंड हार्बर)

दत्त, श्री सुनील (मुम्बई-उत्तर पश्चिम)
दलबीर सिंह, श्री (शहडोल)
दादाहूर, श्री गुरुचरण सिंह (संगरूर)
दास, श्री अनादि चरण (जाजपुर)
दास, श्री जितेन्द्र नाथ (जलपाईगुड़ी)
दास, श्री द्वारका नाथ (करीमगंज)
दास, श्री राम सुन्दर (हाजीपुर)
दिघे, श्री शरद (मुम्बई-उत्तर मध्य)
दीक्षित, श्री श्रीशचन्द्र (वाराणसी)
दीवान, श्री पवन (महासमुन्द)
दुबे, श्रीमती सरोज (इलाहाबाद)
देव, श्री संतोष मोहन (त्रिपुरा-पश्चिम)
देवरा, श्री मुरली (मुम्बई-दक्षिण)
देवराजन, श्री बी. (रसिपुरम)
देवी, श्रीमती विभू कुमारी (त्रिपुरा-पूर्व)
देशमुख, श्री अन्नतराव (वाशिम)
देशमुख, श्री अशोक आन्नदराव (परभनी)
देशमुख, श्री चन्दूभाई (भड़ौच)
द्रोण, श्री जगत बीर सिंह (कानपुर)

ध

धर्मभिक्षम, श्री (नालगोंडा)
धूमल, प्रो. प्रेम (हमीरपुर)

न

नंदी, येल्लैया (सिद्दीपेट)
नवले, श्री विदुरा बिठोबा (खेड़)
नाईक, श्री राम (मुम्बई उत्तर)
नायक, श्री ए. वेंकटेश (रायचूर)
नायक, श्री जी. देवराय (कनारा)
नायक, श्री मृत्युंजय (फूलबनी)
नायक, श्री सुभास चन्द्र (कालाहांडी)
नायकर, श्री डी.के. (धारवाड़ उत्तर)
नारायणन, श्री पी.जी. (गोबिचेट्टिपालयम)
निकम, श्री गोविन्दराव (रत्नागिरी)
नेताम, श्री अरविंद (कांकर)
न्यामगौड, श्री सिद्दप्पा भीमप्पा (बागलकोट)

प

पंवार, श्री हरपाल (कैराना)
पटनायक, श्री शरत (बोलंगीर)
पटनायक, श्री शिवाजी (भुवनेश्वर)
पटेल, डा. अमृतलाल कालिदास (मेहसाना)
पटेल, श्री उत्तमभाई हारजीभाई (बालसाड़)
पटेल, श्री चन्द्रेश (जामनगर)
पटेल, श्री प्रफुल (भंडारा)
पटेल, श्री बृशिण (सीवान)
पटेल, श्री भीम सिंह (रीवा)
पटेल, श्री श्रवण कुमार (जबलपुर)
पटेल, श्री सोमाभाई (सुरेन्द्रनगर)
पटेल, श्री हरिभाई (पोरबन्दर)
पटेल, श्री हरिलाल ननजी (कच्छ)
पद्मा, डा. (श्रीमती) (नागापट्टीनम)
पवार, डा. वसंत (नासिक)
पांजा, श्री अजित (कलकत्ता उत्तर-पूर्व)
पांडियन, श्री डी. (मद्रास-उत्तर)
पाटिल, श्री शिवराज वी. (लादूर)
पाटीदार, श्री रामेश्वर (खारगोन)
पाटील, श्री अनवरी बसवराज (कोप्पल)
पाटील, श्री उत्तमराव देवराव (यवतमाल)
पाटील, श्री प्रकाश वी. (सांगली)
पाटील, श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह (अमरावती)
पाटील, श्री विजय एन. (इरनदोल)
पाटील, श्रीमती सूर्यकान्ता (नान्देड़)
पाठक, श्री सुरेन्द्र पाल (शाहबाद)
पाठक, श्री हरिन (अहमदाबाद)
पाणिग्रही, श्री श्रीबल्लभ (देवगढ़)
पाण्डेय, डा. लक्ष्मीनारायण (मंदसौर)
पात्र, डा. कार्तिकेश्वर (बालासौर)

पायलट, श्री राजेश (दौसा)

पाल, डा. देवी प्रसाद (कलकत्ता उत्तर-पश्चिम)

पाल, श्री रूपचन्द (हुगली)

पालाचौला, श्री वी.आर. नायडू (खम्माम)

पासवान, श्री छेदी पासवान (सासाराम)

पासवान, श्री राम विलास (रोसेड़ा)

पासवान, श्री सुकदेव (अररिया)

पासी, श्री बलराज (नैनीताल)

पुरकायस्थ, श्री कबीन्द्र (सिल्चर)

पूसापति, श्री आनन्दगजपति राजू (बोब्बिली)

पेरुमान, डा. पी. वल्लल (चिदम्बरम)

पोतदुखे, श्री शांताराम (चन्द्रपुर)

प्रकाश, श्री शशि (चैल)

प्रधानी, श्री के. (नवरंगपुर)

प्रभु, श्री आर. (नीलगिरि)

प्रभु झांट्ये, श्री हरीश नारायण (पणजी)

प्रमाणिक, श्री आर.आर. (मथुरापुर)

प्रसाद, श्री वी. श्रीनिवास (चामराज नगर)

प्रसाद, श्री हरि केवल (सलेमपुर)

प्रेम, श्री बी.एल. शर्मा (पूर्वी दिल्ली)

प्रेमी, श्री मंगलराम (बिजनौर)

फ

फर्नांडीज, श्री ओस्कार (उदीपी)

फर्नांडीज, श्री जार्ज (मुजफ्फरपुर)

फातमी, श्री मोहम्मद अली अशरफ (दरभंगा)

फारुक, श्री एम.ओ.एच. (पांडिचेरी)

फुंडकर, श्री पांडुरंग पुडलिक (अकोला)

फैलीरो, श्री एडुआर्डो (मारमागाओ)

ब

बंडारू, श्री दत्तात्रेय (सिकन्दराबाद)

बंसल, श्री पवन कुमार (चंडीगढ़)

बनर्जी, कुमारी ममता (कलकत्ता-दक्षिण)

बरार, श्री जगमीत सिंह (फरीदकोट)

बर्मन, श्री उद्धव (बारपेटा)

बर्मन, श्री पलास (बलूरघाट)

बसु, श्री अनिल (आरामबाग)

बसु, श्री चित्त (बारसाट)

बाला, डा. असीम (नवद्वीप)

बालयोगी, श्री जी.एम.सी. (अमालापुरम)

बालियान, श्री नरेश कुमार (मुजफ्फरनगर)

बीरबल, श्री (श्रीगंगानगर)

बूटा सिंह, श्री (जालौर)

बैरवा, श्री राम नारायण (टोंक)

बैठा, श्री महेन्द्र (बगहा)

ब्रह्मो चौधरी, श्री सत्येन्द्रनाथ (कोकराझार)

भ

भक्त, श्री मनोरंजन (अंडमान और निकोबार द्वीप समूह)

भगत, श्री विश्वेश्वर (बालाघाट)

भट्टाचार्य, श्रीमती मालिनी (जादवपुर)

भडाना, श्री अवतार सिंह (फरीदाबाद)

भण्डारी, श्रीमती दिल कुमारी (सिक्किम)

भाटिया, श्री रघुनन्दन लाल (अमृतसर)

भारद्वाज, श्री परसराम (सारंगढ़)

भार्गव, श्री गिरधारी लाल (जयपुर)

भूरिया, श्री दिलीप सिंह (झाबुआ)

भोंसले, श्री प्रतापराव बी. (सतारा)

भोई, डा. कृपासिन्धु (सम्बलपुर)

म

मंजय लाल, श्री (समस्तीपुर)

मंडल, श्री ब्रह्मानन्द (मुंगेर)

मंडल, श्री सनत कुमार (जयनगर)

मंडल, श्री सूरज (गोड्डा)

मधुकर, श्री कमला मिश्र (मोतिहारी)

मनफूल सिंह, श्री (बीकानेर)

मरबनिआंग, श्री पीटर जी. (शिलांग)

मरान्डी, श्री कृष्ण (सिंहभूम)

मरान्डी, श्री साईमन (राजमहल)
मलिक, श्री धर्मपाल सिह (सोनीपत)
मलिक, श्री पूर्ण चन्द्र (दुर्गापुर)
मल्लिकार्जुन, श्री (महबूबनगर)
मल्लिकारजुनय्या, श्री एस. (तुमकुर)
मल्लू, डा. आर (नगर कुरनूल)
मसूद, श्री रशीद (सहारनपुर)
महतो, श्री बीर सिंह (पुरुलिया)
महतो, श्री राजकिशोर (गिरिडीह)
महतो, श्री शैलेन्द्र (जमशेदपुर)
महाजन, श्रीमती सुमित्रा (इन्दौर)
महेन्द्र कुमारी, श्रीमती (अलवर)
माथुर, श्री शिव चरण (भीलवाड़ा)
मिर्धा, श्री नाथूराम (नागौर)
मिर्धा, श्री राम निवास (बाड़मेर)
मिश्र, श्री जनार्दन (सीतापुर)
मिश्र, श्री राम नगीना (पडरौना)
मिश्र, श्री श्याम बिहारी (बिल्हौर)
मिश्र, श्री सत्यगोपाल (तामलुक)
मीणा, श्री भेरू लाल (सलूम्बर)
मुखर्जी, श्रीमती गीता (पंसकुरा)
मुखर्जी, श्री प्रमथेश (बरहामपुर)
मुखर्जी, श्री सुब्रत (रायगंज)
मुखोपाध्याय, श्री अजय (कृश नगर)
मुजाहिद, श्री बी.एम. (धारवाड़-दक्षिण)
मुण्डा, श्री कड़िया (खूंटी)
मुत्तेमवार, श्री विलास (चिमूर)
मुनियप्पा, श्री के.एच. (कोलार)
मुरलीधरन, श्री के. (कालीकट)
मुरुगेसन, डा.एन. (करूर)
मुरमु, श्री रूप चन्द (झाड़ग्राम)
मूर्ति, श्री एम.वी. चन्द्रशेखर (कनकपुरा)
मूर्ति, श्री एम.वी.वी.एस. (विशाखापटनम)
मेघे, श्री दत्ता (नागपुर)
मेहता, श्री भुवनेश्वर प्रसाद (हजारीबाग)
मैथ्यू, श्री पाला के.एम. (इदुक्को)
मोल्लाह, श्री हन्नान (उलुबेरिया)
मोहन सिंह, श्री (फिरोजपुर)
मौर्य, श्री आनन्द रत्न (चंदौली)

य

यादव, श्री अर्जुन सिंह (जौनपुर)
यादव, श्री चुन चुन प्रसाद (भागलपुर)
यादव, श्री छोटे सिंह (कन्नोज)
यादव, श्री देवेन्द्र प्रसाद (झंझारपुर)
यादव, श्री राम कृपाल (पटना)
यादव, श्री रामलखन सिंह (आरा)
यादव, श्री राम शरण (खगड़िया)
यादव, श्री विजय कुमार (नालन्दा)
यादव, डा. एस.पी. (सम्भल)
यादव, श्री सत्यपाल सिंह (शाहजहांपुर)
यादव, श्री सूर्यनारायण (सहरसा)
युमनाम, श्री याइमा सिंह (आतरिक मणिपुर)

र

रंगपी, डा. जयन्त (स्वशासी जिला)
रथ, श्री रामचन्द्र (आसका)
राजनारायण, श्री (बासगांव)
राजरविवर्मा, श्री बी. (पोल्लाची)
राजुलु, डा. आर.के.जी. (शिवकासी)
राजे, श्रीमती वसुन्धरा (झालावाड़)
राजेन्द्रकुमार, श्री एस.एस.आर. (चिंगलपट्ट)
राजेश कुमार, श्री (गया)
राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव, श्री (पूर्णिया)
राजेश्वरन, डा. वी. (रामनाथपुरम)
राजेश्वरी, श्रीमती बासवा (बेल्लारी)
राठवा, श्री एन.जे. (छोटा उदयपुर)
राणा, श्री काशीराम (सूरत)

राम अवध, श्री (अकबरपुर)

राम, श्री प्रेम चन्द (नवादा)

रामचन्द्रन, श्री मुल्लापल्ली (कन्नानौर)

रामदेव राम, श्री (पलामू)

राम बदन, श्री (लालगंज)

राम बाबू, श्री ए.जी.एस. (मदुरै)

राममूर्ति, श्री के. (कृष्णगिरि)

राम सागर, श्री (बाराबंकी)

राम सिंह, श्री (हरिद्वार)

रामसामी, श्री राजगोपाल नायडू (पेरियाकुलम)

रामय्या, श्री बोल्ला बुल्ली (एलुरू)

राय, श्री एम. रमन्ना (कासरगोड)

राय, श्री कल्पनाथ (घोसी)

राय, श्री नवल किशोर (सीतामढ़ी)

राय, श्री रवि (केन्द्रपाडा)

राय, श्री राम निहोर (राबर्ट्सगंज)

राय, श्री लाल बाबू (छपरा)

राय, डा. सुधीर (बर्दवान)

राय, श्री हाराधन (आसनसोल)

रायचौधरी, श्री सुदर्शन (सीरमपुर)

रायप्रधान, श्री अमर (कूचबिहार)

राव, श्री डी. वेंकटेश्वर (बापतला)

राव, श्री जे. चोक्का (करीमनगर)

राव, श्री पी.वी. नरसिंह (नन्दयाल)

राव राम सिंह, कर्नल (महेन्द्रगढ)

राव, श्री वी. कृष्ण (चिक्बल्लापुर)

रावत, श्री प्रभु लाल (बांसवाड़ा)

रावत, श्री भगवान शंकर (आगरा)

रावत, प्रो. रासा सिंह (अजमेर)

रावल, डा. लाल बहादुर (हाथरस)

रावले, श्री मोहन (मुम्बई-दक्षिण मध्य)

राही, श्री राम लाल (मिसरिख)

रेड्डय्या यादव, श्री के.पी. (मछलीपटनम)

रेड्डी, श्री आर. सुरेन्द्र (वारंगल)

रेड्डी, श्री ए. इन्द्रकरन (आदिलाबाद)

रेड्डी, श्री ए. वेंकट (अनन्तपुर)

रेड्डी, श्री एम. बागा (मेडक)

रेड्डी, श्री जी. गंगा (निजामाबाद)

रेड्डी, श्री एम.जी. (चित्तूर)

रेड्डी, श्री बी.एन. (मिरयालगुडा)

रेड्डी, श्री वाई.एस. राजेश्वर (कुडप्पा)

रोशन लाल, श्री (खुर्जा)

ल

लक्ष्मण, प्रो. सावित्री (मुकुन्दपुरम)

लालजान पाशा, श्री एस.एम. (गुन्टूर)

लोढा, श्री गुमान मल (पाली)

लवली आनन्द, श्रीमती (वैशाली)

व

वर्मा, श्री उपेन्द्र नाथ (चतरा)

वर्मा, श्री फूलचन्द (शाजापुर)

वर्मा, श्री भवानी लाल (जांजगीर)

वर्मा, श्री रतिलाल (धन्धुका)

वर्मा, प्रो. रीता (धनबाद)

वर्मा, कुमारी विमला (सिवनी)

वर्मा, श्री शिव शरण (मछलीशहर)

वर्मा, श्री सुशील चन्द (भोपाल)

वाजपेयी, श्री अटल बिहारी (लखनऊ)

वाघेला, श्री शंकर सिंह (गोधरा)

वाड्डे, श्री शोभनाद्रीश्वर राव (विजयवाडा)

वान्डायार, श्री के.टी. (थंजावुर)

वासनिक, श्री मुकुल (बुलढाना)

विजयराघवन, श्री वी.एस. (पालघाट)

विलियम्स, मेजर आर.जी. (नामनिर्देशित आंग्ल भारतीय)

वीरप्पा, श्री रामचन्द्र (बीदर)

वीरेन्द्र सिंह, श्री (मिर्जापुर)

वेकरिया, श्री शिवलाल नागजीभाई (राजकोट)

व्यास, डा. गिरिजा (उदयपुर)

श

शंकरानन्द, श्री बी. (चिकोडी)

शर्मा, कैप्टन सतीश कुमार (अमेठी)

शर्मा, श्री चिरंजी लाल (करनाल)

शर्मा, श्री जीवन (अल्मोडा)

शर्मा, श्री राजेन्द्र कुमार (रामपुर)

शर्मा, श्री विश्वनाथ (हमीरपुर)

शाक्य, डा. महादीपक सिंह (एटा)

शास्त्री, आचार्य विश्वनाथ दास (सुल्तानपुर)

शास्त्री, श्री राजनाथ सोनकर (सैदपुर)

शास्त्री, श्री विश्वनाथ (गाजीपुर)

शाह, श्री मानवेन्द्र (टिहरी गढ़वाल)

शिंगडा, श्री डी.बी. (दहानू)

शिवप्पा, श्री के.जी. (शिमोगा)

शिवरामन, श्री एम. (ओट्टापलम)

शुक्ल, श्री अष्टभुजा प्रसाद (खलीलाबाद)

शुक्ल, श्री विद्याचरण (रायपुर)

शेल्के, श्री मारुति देटराम (अहमद नगर)

शैलजा, कुमारी (सिरसा)

श्रीधरण, डा. राजागोपालन (मद्रास दक्षिण)

श्रीनिवासन, श्री सी. (डिन्डिगुल)

स

संगमा, श्री पूर्णो ए. (तुरा)

संघाणी, श्री दिलीप भाई (अमरेली)

सईद, श्री पी.एम. (लक्षद्वीप)

सज्जन कुमार, श्री (बाह्य दिल्ली)

सत्रुचार्ला, श्री विजयराम राजू (पार्वती पुरम)

सरस्वती, श्री योगानन्द (भिंड)

सरोदे, डा. गुणवन्त रामभाऊ (जलगांव)

सलीम, श्री मुहम्मद यूनुस (कटिहार)

साक्षीजी, डा. (मथुरा)

सादुल, श्री धर्मण्णा मोंडय्या (शोलापुर)

सानीपल्ली, श्री गंगाधर (हिन्दुपुर)

साय, श्री ए. प्रताप (राजमपेट)

सावन्त, श्री सुधीर (राजापुर)

सावे, श्री मोरेश्वर (औरंगाबाद)

साही, श्रीमती कृष्णा (बेगूसराय)

सिंगला, श्री संत राम (पटियाला)

सिंधिया, श्रीमती विजयराजे (गुना)

सिंधिया, श्री माधवराव (ग्वालियर)

सिदलाल, श्री एस.बी. (बेलगांव)

सिद्धार्थ, श्रीमती डी.के. तारादेवी (चिकमगलूर)

सिल्वेरा, डा. सी. (मिजोरम)

सिंह, श्री अभय प्रताप (प्रतापगढ़)

सिंह, श्री अर्जुन (सतना)

सिंह, श्री उदय प्रताप (मैनपुरी)

सिंह, श्री खेलसाय (सरगुजा)

सिंह, डा. छत्रपाल (बुलन्दशहर)

सिंह, ठाकुर महेन्द्र कुमार (खंडवा)

सिंह, श्री देवी बक्स (उन्नाव)

सिंह, कुमारी पुष्पा देवी (रायगढ)

सिंह, श्री प्रताप (बांका)

सिंह, श्री बृजभूषण शरण (गोण्डा)

सिंह, श्री मोतीलाल (सीधी)

सिंह, श्री मोहन (देवरिया)

सिंह, श्री राजवीर (आंवला)

सिंह, श्री रामनरेश (औरंगाबाद)

सिंह, श्री रामपाल (डुमरिया गंज)

सिंह, श्री राम प्रसाद (विक्रमगंज)

सिंह, श्री रामाश्रय प्रसाद (जहानाबाद)

सिंह, श्री लक्ष्मण (राजगढ)

सिंह, श्री शिवेन्द्र बहादुर (राजनदगांव)

सिंह, श्री सत्यदेव (बलरामपुर)

सिंह, श्री हरि किशोर (शिवहर)

सिंहदेव, श्री के.पी. (ढेंकनाल)

सुख राम, श्री (मंडी)

सुखबंस कौर, श्रीमती (गुरदासपुर)

सुब्बाराव, श्री थोटा (काकिनाडा)

सुर, श्री मनोरंजन (बसीरहाट)

सुरेश, श्री कोडीकुन्नील (अडूर)

सुल्तानपुरी, श्री कृष्ण दत्त (शिमला)

सेट, श्री इब्राहिम सुलेमान (पोन्नानी)

सैकिया, श्री मुहीराम (नौगोंग)

सैयद, श्री शहाबुद्दीन (किशनगंज)

सोडी, श्री मानकूराम (बस्तर)

सोरेन, श्री शिबू (दुमका)

सोलंकी, श्री सूरजभानु (धार)

सौन्दरम, डा. (श्रीमती) के.एस. (तिरुचेंगौड़)

स्वामी, श्री चिन्मयानन्द (बदायूं)

स्वामी, श्री जी. वेंकट (पेड्डापल्ली)

स्वामी, श्री सुरेशानन्द (जलेसर)

ह

हरचन्द सिंह, श्री (रोपड़)

हूड्डा, श्री भूपेन्द्र सिंह (रोहतक)

हान्डिक, श्री विजय कृष्ण (जोरहाट)

हुसैन, श्री सैयद मसूदल (मुर्शिदाबाद)

लोक सभा के अधिकारी

अध्यक्ष

श्री शिवराज वी. पाटिल

उपाध्यक्ष

श्री एस. मल्लिकारजुनय्या

सभापति तालिका

श्री शरद दिघे

श्री पीटर जी. मरबनिआग

श्री नीतीश कुमार

श्रीमती गीता मुखर्जी

श्री तारा सिंह

श्रीमती मालिनी भट्टाचार्य

श्री पी.सी. चाको

श्रीमती संतोष चौधरी

प्रो. रीता वर्मा

महासचिव

श्री सुरेन्द्र मिश्र

मंत्रि-परिषद

मन्त्रिमंडल के सदस्य

प्रधान मंत्री तथा कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन; विज्ञान और प्रौद्योगिकी; महासागर विकास; इलैक्ट्रानिकी; परमाणु ऊर्जा; अंतरिक्ष; अपारंपरिक ऊर्जा स्रोत; विधि, न्याय और कंपनी कार्य; रक्षा; जम्मू और कश्मीर मामले; शहरी कार्य तथा रोजगार; रेल; मानव संसाधन विकास, नागरिक आपूर्ति; उपभोक्ता मामले तथा सार्वजनिक वितरण; तथा अन्य उन विषयों के प्रभारी जो मंत्रिमंडल स्तर के किसी अन्य मंत्री अथवा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) को नहीं दिए गए हैं।	श्री पी.वी. नरसिंह राव
स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री तथा जल संसाधन मंत्री :	श्री ए.आर. अन्तुले
खाद्य मंत्री :	श्री अजित सिंह
श्रम मंत्री तथा वस्त्र मंत्री :	श्री जी. वेंकटस्वामी
नागर विमानन तथा पर्यटन मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री	श्री गुलाम नबी आजाद
ग्रामीण क्षेत्र तथा रोजगार मंत्री तथा कृषि मंत्री	डा. जगन्नाथ मिश्र
उद्योग मंत्री	श्री के. करुणाकरण

वित्त मंत्री	श्री मनमोहन सिंह
विद्युत मंत्री	श्री एन.के.पी. साल्वे
सूचना तथा प्रसारण मंत्री	श्री पी.ए. संगमा
विदेश मंत्री	श्री प्रणव मुखर्जी
रसायन तथा उर्वरक मंत्री	श्री राम लखन सिंह यादव
गृह मंत्री	श्री एस.बी. चव्हाण
कल्याण मंत्री	श्री सीता राम केसरी

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

योजना तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के राज्य मंत्री	श्री बलराम सिंह यादव
खान मंत्रालय के राज्य मंत्री	श्री गिरिधर गमांग
कोयला मंत्रालय के राज्य मंत्री	श्री जगदीश टाइटलर
खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के राज्य मंत्री	श्री के.पी. सिंह देव
जल-भूतल परिवहन मंत्रालय के राज्य मंत्री	श्री एम. राजशेखर मूर्ति
वाणिज्य मंत्रालय के राज्य मंत्री	श्री पी. चिदम्बरम्
पर्यावरण तथा वन मंत्रालय के राज्य मंत्री	श्री राजेश पायलट
पैट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्रालय के राज्य मंत्री	कैप्टन सतीश कुमार शर्मा
इस्पात मंत्रालय के राज्य मंत्री	श्री संतोष मोहन देव
संचार मंत्रालय के राज्य मंत्री	श्री सुख राम

राज्य मंत्री

प्रधान मंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री तथा कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री असलम शेर खां
प्रधान मंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री तथा परमाणु ऊर्जा विभाग तथा अंतरिक्ष विभाग में राज्य मंत्री तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री भुवनेश चतुर्वेदी
उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री	डा. सी. सिल्वेरा
वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री	डा. देवी प्रसाद पाल
रसायन तथा उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा इलेक्ट्रोनिकी विभाग और महासागर विकास विभाग में राज्य मंत्री	श्री एडुआर्डो फैलीरो

नागर विमानन तथा पर्यटन मंत्रालय (नागर विमानन विभाग) में राज्य मंत्री	श्री जी.वाई. कृष्णन
विधि, न्याय तथा कंपनी कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री एच.आर. भारद्वाज
कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री के.वी. तंग्काबालू
नागरिक आपूर्ति, उपभोक्ता मामले तथा सार्वजनिक वितरण मंत्रालय (नागरिक आपूर्ति विभाग) में राज्य मंत्री	श्रीमती कृष्णा साही
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) में राज्य मंत्री	डा. कृपासिन्धु भोई
उद्योग मंत्रालय (लघु उद्योग तथा कृषि और ग्रामीण उद्योग विभाग) में राज्य मंत्री	श्री एम. अरुणाचलम
वित्त मंत्रालय मे राज्य मंत्री	श्री एम.वी. चन्द्रशेखर मूर्ति
रक्षा मंत्रालय (रक्षा विभाग—अनुसंधान तथा विकास विभाग) में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री मल्लिकार्जुन
कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्रीमती मारग्रेट आल्वा
संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री मतंग सिंह
गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री	प्रो. एम. कामसन
कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री अयूब खां
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (युवा कार्य तथा खेल विभाग) में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री मुकुल वासनिक
अपारंपरिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय मे राज्य मंत्री	प्रो. पी.जे. कुरियन
सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री पी.एम. सईद
जल संसाधन मंत्रालय मे राज्य मंत्री	श्री पी.वी. रंगय्यानायडू
स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय (भारतीय चिकित्सा प्रणाली तथा होम्योपैथी विभाग) में राज्य मंत्री	श्री पवन सिंह घाटोवार
विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री आर.एल. भाटिया
गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री राम लाल राही
ग्रामीण क्षेत्र तथा रोजगार मंत्रालय (बंजर भूमि विकास विभाग) में राज्य मंत्री	कर्नल राव राम सिंह
शहरी कार्य तथा रोजगार मंत्रालय (शहरी रोजगार तथा गरीबी उन्मूलन विभाग) में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री एस.एस. अहलुवालिया
विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री सलमान खुर्शीद

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग एवं संस्कृति विभाग) में राज्य मंत्री	कुमारी शैलजा
नागर विमानन तथा पर्यटन मंत्रालय (पर्यटन विभाग) में राज्य मंत्री	श्रीमती सुखबंस कौर
रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री सुरेश कलमाडी
रक्षा मंत्रालय (रक्षा उत्पादन तथा आपूर्ति विभाग) में राज्य मंत्री	श्री सुरेश पचौरी
गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री सैयद सिब्ते रजी
विद्युत मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्रीमती उर्मिला सी. पटेल
ग्रामीण क्षेत्र तथा रोजगार मंत्रालय (ग्रामीण विकास विभाग) में राज्य मंत्री	श्री उत्तमभाई हारजीभाई पटेल
नागरिक आपूर्ति, उपभोक्ता मामले तथा सार्वजनिक वितरण मंत्रालय (उपभोक्ता मामले तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली विभाग) में राज्य मंत्री	श्री विनोद शर्मा
ग्रामीण क्षेत्र तथा रोजगार मंत्रालय (ग्रामीण रोजगार तथा गरीबी उन्मूलन विभाग) में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	श्री विलास मुत्तेमवार
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (महिला एवं बाल विकास विभाग) में राज्य मंत्री	कुमारी विमला वर्मा

लोक सभा

सोमवार, 26 फरवरी, 1996/7 फाल्गुन 1917 (शक)

लोक सभा 12.22 म.पू. पर समवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

राष्ट्रगान

राष्ट्रगान की धुन बजाई गई

12.24 म.प.

[अनुवाद]

महासचिव : महोदय मैं 26 फरवरी, 1996 को एक साथ समवेत ससद के दोनों सदनों के समक्ष राष्ट्रपति के अभिभाषण* की एक प्रति सगा पटल पर रखता हूं।

[ग्रन्थालय में भी रखी गई। देखिये संख्या एल.टी. 8989/96]

राष्ट्रपति का अभिभाषण

[हिन्दी]

माननीय सदस्यगण,

मैं संसद के इस सत्र में आपका स्वागत करता हूं।

10वीं लोकसभा ने अपने कार्यों को काफी हद तक पूरा कर लिया है तथा आपके कुशल नेतृत्व में देश के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। इस अवसर पर मैं, आप सभी को राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव से की गई सेवाओं के लिए बधाई देता हूं।

राष्ट्र ने महात्मा गाधी की 125वीं जयंती मनायी। इस अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों और विदेशों में अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए गए। अहिंसा एवं अन्य गांधीवादी सिद्धांतों के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तन के लिए गांधी शान्ति पुरस्कार की स्थापना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। प्रथम गांधी शान्ति पुरस्कार डॉ. जुलियस के. न्यरेरे को प्रदान किया गया। गांधी जयंती समारोह 31 जनवरी, 1996 को नई दिल्ली के बाल्मीकि मंदिर परिसर में स्थित "बापू कुटीर" में गरिमामय समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। गांधी जी प्रायः वहां ठहरा करते थे।

देश में कानून और व्यवस्था की स्थिति नियंत्रण में रही। विभिन्न समुदायों तथा वर्गों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध सुनिश्चित करने के लिए सरकार आगामी महीनों में और अधिक सतर्कता बरतेगी।

आतंकवाद तथा विद्रोही ताकतों पर काबू पा लिया गया है। अलगाववादी प्रवृत्तियों को काफी हद तक नियंत्रित किया गया है। इस संदर्भ में सुरक्षा बलों का कार्य काफी सराहनीय रहा है। परन्तु पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में हथियार गिराए जाने की घटना से यह आवश्यक हो गया है कि सतर्कता निरंतर बरती जाए। इस घटना की छानबीन काफी तेजी से की जा रही है, और देश में एवं देश के बाहर इससे जुडे तत्वों का पता लगाया जा रहा है। देश के हवाई मार्गों की प्रभावी चौकसी सुनिश्चित करने के लिए उपाय किए जा रहे हैं।

जम्मू व कश्मीर मे उग्रवादियों तथा भाडे के विदेशी सैनिकों के विरुद्ध सुरक्षा बलों की संयुक्त कार्रवाई तथा वहां विकास संबंधी कार्यकलापों में तेजी लाने के फलस्वरूप स्थिति में स्पष्ट सुधार आया है। इससे राजनीतिक गतिविधियों को बहाल करना संभव हो पाया है। संसद में 1995-96 में सतुलित बजट पारित किया, और पिछले कई वर्षों के बाद पहली बार यह आशा की जा रही है कि योजनागत परिव्यय को पूरी तरह से विकास योजनाओं पर ही व्यय किया जा सकेगा, और गैर-योजना संसाधनों के अंतर को पूरा करने के लिए इसका उपयोग नहीं किया जाएगा। यद्यपि सरकार को इस राज्य में राष्ट्रपति शासन की अवधि बढाकर 17 जुलाई, 1996 तक करनी पडी, फिर भी सरकार राज्य में शीघ्रातिशीघ्र चुनी हुई सरकार की बहाली के लिए प्रतिबद्ध है।

पूर्वोतर क्षेत्र के आर्थिक पिछडेपन को दूर करने के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं। पूर्वोतर परिषद इस क्षेत्र के विकास संबंधी कार्यकलापों के कार्यान्वयन के लिए एक कारगर संस्था के रूप में उभरकर सामने आई है। असम में कारबी अंगलांग और उत्तरी कछार पहाडियों के स्वायत्त जिला परिषदों को और अधिक शक्तिया देने के लिए संविधान की छठी अनुसूची में संशोधन किया गया है।

आर्थिक परिदृश्य में लगातार सुधार हो रहा है। 1991-92 के बाद के वर्षों में सकल घरेलू उत्पाद में अपेक्षाकृत काफी तेजी से वृद्धि हुई है। वर्ष 1994-95 मे यह बढ़कर 6.3 प्रतिशत हो गया। वर्ष 1994-95 में वर्तमान कीमतों पर सकल घरेलू बचत में सुधार हुआ और यह सकल घरेलू उत्पाद का 24.4 प्रतिशत रही। पिछले वर्ष की इस अवधि की तुलना मे चालू वर्ष के पहले 6 महीनों में औद्योगिक उत्पादन में 12 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो उल्लेखनीय सुधार है।

इसके साथ-साथ, चालू वित्त वर्ष के पहले 8 महीनों में निर्यात में 24.17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अर्थव्यवस्था में, विशेष रूप से औद्योगिक क्षेत्र में चहुंमुखी विकास के कारण और अधिक आयात भी करना पडा। विदेशी मुद्रा भंडार की स्थिति काफी अच्छी है, और अब यह लगभग 16 बिलियन डालर है।

मुद्रा-स्फीति की वार्षिक दर अगस्त, 1991 में लगभग 17 प्रतिशत तक पहुंच गयी थी। परन्तु अब इसे नियंत्रित कर लिया गया है, और यह चालू वर्ष में घटकर 5 प्रतिशत के आसपास आ गई है, जो पिछले सात वर्षों में सबसे कम है। कृषि क्षेत्र को मिले व्यापक प्रोत्साहन के परिणामस्वरूप खाद्यान्न के उत्पादन में वृद्धि हुई है, और उसका पर्याप्त भंडार है। आम उपभोग की विभिन्न वस्तुओं की उपलब्धता बनाए रखी गयी है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सुदृढ़ किया गया है, और

*राष्ट्रपति ने अपना अभिभाषण हिन्दी में दिया।

पुनर्व्यवस्थित सार्वजनिक वितरण प्रणाली की शुरुआत करके देश के सबसे निर्धन इलाकों मे रहने वाले लोगों को अतिरिक्त रियायतें दी गयी हैं।

लघु उद्योग क्षेत्र का योगदान विर्निर्माण के क्षेत्र में हुए उत्पादन का लगभग 40 प्रतिशत है, और यह देश के कुल निर्यात का 34 प्रतिशत है। इस क्षेत्र में वर्ष 1994-95 में 10 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी, और वर्ष 1994-95 के अंत तक 146 लाख व्यक्तियों को रोजगार मिला। इस क्षेत्र से वर्ष 1991-92 में 13,883 करोड रुपये के माल का निर्यात किया गया था। अनुमान है कि वर्ष 1994-95 में बढ़कर 26,400 करोड रुपये हो गया है।

वर्ष 1994-95 मे खादी एवं ग्रामोद्योग क्षेत्र में 4069 करोड़ रुपये से अधिक की बिक्री हुई। इसी वर्ष इस क्षेत्र में 53.46 लाख व्यक्तियों को रोजगार मिला। खादी ग्रामोद्योग निगम को इस वर्ष पहली बार एक हजार करोड रुपये का सहायता संघ ऋण दिया गया है। इसमे से खादी ग्रामोद्योग निगम ने लगभग एक लाख व्यक्तियों के लिए रोजगार के अतिरिक्त अवसर पैदा करने के लिए जनवरी, 1996 के अंत तक कई परियोजनाओं को स्वीकृति दी, जिनकी लागत लगभग 235 करोड रुपये है।

हमारी कृषि नीति मृदा एवं जल का एकीकृत रूप में सर्वोत्तम उपयोग करके उत्पादन में वृद्धि करने की रही है। आठवीं योजना के दौरान वर्षा-प्रधान क्षेत्रों के लिए पुनर्संगठित जलविभाजक विकास परियोजना के लिए 1100 करोड रुपये आबंटित किए गए है। सूखे की संभावना वाले क्षेत्रों के कार्यक्रम का विस्तार 13 राज्यों के 149 जिलों के 946 प्रखण्डों तक किया गया है। मरुस्थल विकास कार्यक्रम का विस्तार 7 राज्यों के 36 जिलों के 227 प्रखंडों तक कर दिया गया है। इन कार्यक्रमों को स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी से लागू किया जा रहा है।

वर्ष 1994-95 में 19 करोड़ 20 लाख मीटरी टन खाद्यान्न का उत्पादन करके एक नया कीर्तिमान स्थापित किया गया। चीनी का उत्पादन भी 1994-95 में लगभग 145.85 लाख मीटरी टन के रिकार्ड स्तर तक पहुंच गया। सरकार ने चीनी की उपलब्धता और कीमतों में संभावित उतार-चढ़ाव के संबंध में एहतियात के तौर पर इस वर्ष चीनी का बफर स्टाक पांच लाख मीटरी टन बनाया है।

वर्ष 1994-95 के दौरान संस्थागत एजेन्सियों के माध्यम से 21,113 करोड़ रुपये के कृषि ऋण वितरित किए गए, जबकि वर्ष 1995-96 में इनका वितरण 26,450 करोड़ रुपये तक हो जाने का अनुमान है। वर्ष 1994-95 के दौरान 135.64 लाख मीटरी टन रासायनिक उर्वरकों की खपत हुई थी, तथा वर्ष 1995-96 में इनकी खपत बढकर 156.64 लाख मीटरी टन होने की आशा है।

सरकार गरीबों की आवश्यकताओं के प्रति पूरी तरह सजग है। गरीबी का उन्मूलन करने के कारगर कार्यक्रमों का विस्तार किया गया है। यह ग्रामीण विकास, रोजगार सृजन, आवास, ग्रामीण जल आपूर्ति आदि मदों के लिए आबंटनों में हुई पर्याप्त वृद्धि से परिलक्षित होता है।

वर्ष 1985-86 और 1994-95 के बीच इंदिरा आवास योजना के अंतर्गत लगभग 20 लाख मकानों का निर्माण किया गया। इस कार्यक्रम को और आगे बढाने के लिए वर्ष 1995-96 में एक हजार करोड रुपये के बजट का प्रावधान से 10 लाख मकानों के निर्माण का वृहत कार्यक्रम शुरू किया गया है और निर्माण कार्य जोरों पर है। इसके अतिरिक्त अन्य वर्गों एव सरकारी कर्मचारियों के लिए और अधिक आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराने के उपाय किए जा रहे हैं।

प्रधानमंत्री रोजगार योजना के अन्तर्गत वर्ष 1994-95 के दौरान 1,96,154 व्यक्तियों को लाभ पहुंचा। इस योजना का उद्देश्य शिक्षित बेरोजगार युवाओं को स्व-रोजगार के अवसर मुहैया कराना है। वर्ष 1995-96 के लिए इस योजना के तहत 2.6 लाख व्यक्तियों को ऋण प्रदान करने का लक्ष्य है।

जैसा कि माननीय सदस्यगण जानते हैं, सरकार ने राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम शुरू किया है, जिसके अंतर्गत वृद्धावस्था पेंशन, प्रसूति-सुविधा और गरीब परिवारों में अकेले कमाने वाले व्यक्ति की मृत्यु होने पर एकमुश्त राशि प्रदान करने की व्यवस्था है। इस पैकेज के साथ-साथ समूह जीवन बीमा की एक अग्रणी योजना शुरू की गई है, जिसमें गरीबों के लिए घटी दर पर प्रीमियम की व्यवस्था है।

शहरी गरीबों की समस्याओं से एकीकृत रूप से निपटने के लिए 50 हजार से एक लाख की आबादी वाले श्रेणी-2 के सभी 345 शहरों में नवम्बर, 1995 मे एकीकृत शहरी गरीबी उन्मूलन योजना शुरू की गई है। इस कार्यक्रम के लिए चालू वित्त वर्ष मे 100 करोड रुपये का प्रावधान किया गया है।

सरकार ने जिला स्तर एवं उससे निचले स्तरों पर संचालित केन्द्र द्वारा प्रायोजित सभी योजनाओ में पचायतों और नगरपालिकाओं की भूमिका एवं शक्तियों का दायरा बढा दिया है। इस पहल के कारण सबसे निचले स्तरों पर दस लाख से अधिक महिलायें नेतृत्व करने—और निर्णय लेने की स्थिति में होंगी। इन निकायों को समुचित वित्तीय एवं प्रशासनिक दायित्व सौंपे जाने के लिए राज्य सरकारों से कहा गया है।

विशेष केन्द्रीय सहायता योजनाओं के अंतर्गत विशेष घटक योजना, मैट्रिकोत्तर छात्रवृत्तियों, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति एव अनुसूचित जनजाति वित्त एवं विकास निगम के लिए आबंटनों, तथा स्वैच्छिक संगठनो को दी जाने वाली सहायता में काफी वृद्धि की गई है। सरकार ने मैट्रिकोत्तर छात्रवृत्ति स्कीम के तहत अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिए निर्वाह एवं अन्य भत्तों की दरों में भी संशोधन किया है।

मल-सफाई के कार्य में लगे सफाई कर्मचारियों की मुक्ति और उनके पुनर्वास की राष्ट्रीय योजना के क्रियान्वयन की निगरानी करने के लिए राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग की स्थापना की गई है। इस योजना के प्रारम्भ होने से अब तक लगभग ऐसे 94 हजार व्यक्तियों को अन्य व्यवसायों का प्रशिक्षण दिया गया है तथा 2.5 लाख व्यक्तियों का पुनर्वास किया गया है।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम ने स्व-रोजगार संबंधी कार्यों के लिए अब तक 131.64 करोड़ रुपये वितरित किए हैं। सरकार ने अब तक 122 कोचिंग केन्द्रों को वित्तीय सहायता प्रदान की है, ताकि विभिन्न भर्ती परीक्षाओं में अन्य पिछडे वर्गों के उम्मीदवार सामान्य वर्ग के उम्मीदवारों के साथ प्रतियोगिता में समान रूप से भाग ले सकें।

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विकास एवं वित्त निगम ने राज्य स्तरीय एजेन्सियों के साथ संपर्क स्थापित किया है। निगम स्व-रोजगार के लिए उनके माध्यम से ऋण वितरित कर रहा है। वक्फ बोर्डों के प्रभावी और लोकतांत्रिक प्रशासन के लिए पहली जनवरी, 1996 से वक्फ अधिनियम, 1995 लागू किया गया है। निःशक्त व्यक्तियों को समान अवसर प्रदान करने के लिए निःशक्त व्यक्ति (समान अवसर, अधिकार संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 बनाया गया है। विकलांग व्यक्तियों के लिए 400 करोड़ रुपये की प्राधिकृत शेयर पूंजी से राष्ट्रीय वित्त एवं विकास निगम स्थापित करने का भी निर्णय लिया गया है। मंदबुद्धि व्यक्तियों और दिमागी पक्षाघात से पीड़ित व्यक्तियों की पूर्ण देखभाल करने के लिए राष्ट्रीय न्यास स्थापित करने के बारे में विधेयक लोक सभा में पेश किया गया है।

वैक्सिन से रोकी जा सकने वाली छः बीमारियों से बच्चों की प्रतिरक्षा के लिए चलाए जा रहे टीकाकरण कार्यक्रम के अभी से उत्साहवर्द्धक नतीजे मिलने शुरू हो गए हैं। सन् 2000 तक पोलियो उन्मूलन के विश्व लक्ष्य को देखते हुए 9 दिसम्बर, 1995 को पूरे देश में 3 वर्ष तक के आयु वर्ग के साढ़े सात करोड़ से भी अधिक शिशुओं को पोलियो टीके की पूरक खुराक दी गई। इस कार्यक्रम का दूसरा दौर 20 जनवरी, 1996 को चलाया गया। आने वाले वर्षों में भी पल्स पोलियो टीकाकरण कार्यक्रम जारी रहेगा।

सन् 2000 तक शिक्षा के लिए सकल घरेलू उत्पाद के 6 प्रतिशत आबंटन का लक्ष्य प्राप्त करने की सरकार की प्रतिबद्धता को देखते हुए शिक्षा क्षेत्र के लिए आबंटन राशि में निरन्तर वृद्धि की जा रही है। सबके लिए प्रारम्भिक शिक्षा के लक्ष्य को पूरा करने के लिए आठवीं योजना के अंत तक 110 जिलों को जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के दायरे में लाया जाएगा। इस शताब्दी के अंत तक 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को इस कार्यक्रम में शामिल करने के लिए राष्ट्रीय प्रारम्भिक शिक्षा मिशन शुरू किया गया है। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के हिस्से के रूप में देश में समग्र साक्षरता अभियानों का विस्तार 368 जिलों में, और साक्षरता उपरान्त अभियानों का विस्तार 159 जिलों में किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में पहली से पांचवीं कक्षा तक के बच्चों को पोषण-आहार प्रदान करने के लिए एक प्रमुख राष्ट्रीय कार्यक्रम 15 अगस्त, 1995 से शुरू किया गया है। इस कार्यक्रम से तीन वर्ष में लगभग 11 करोड़ बच्चे लाभान्वित होंगे।

पिछले पांच वर्षों से देश में औद्योगिक संबंध परिदृश्य में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। हड़तालों एवं तालाबंदियों की संख्या तथा बेकार श्रम दिवसों की संख्या में बहुत कमी आई है। सरकार नवम्बर, 1995 में शुरू की गई कर्मचारी पेंशन योजना को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस योजना के तहत एक करोड़ 90 लाख औद्योगिक कामगारों और उनके परिवारों को पहली बार आजीवन सामाजिक सुरक्षा प्रदान की गई है।

हमने अपने माध्यस्थम कानून को अंतराष्ट्रीय सोच के अनुरूप बनाने के लिए 'माध्यस्थम और सुलह अध्यादेश, 1996' प्रख्यापित किया है। इस अध्यादेश से, तथा विवादों के समाधान की वैकल्पिक व्यवस्था लागू करने के लिए किए गए अन्य उपायों से यह आशा की जाती है कि भारत इस व्यवस्था को लागू करने के लिए शीघ्र ही दक्षिण एशिया क्षेत्र में अग्रणी राष्ट्र के रूप में उभरेगा।

पिछले वर्ष हमारे वैज्ञानिकों की उपलब्धियां उल्लेखनीय रहीं, जो भविष्य के लिए हमारे मन में विश्वास पैदा करती हैं।

इनसैट-2 सी और आई.आर.एस.-1 सी उपग्रहों को पिछले दिसम्बर में सफलतापूर्वक छोड़े जाने से अति आधुनिक अंतरिक्ष प्रणालियों के अभिकल्प, निर्माण और संचालन की हमारी क्षमताओं का एक बार फिर प्रदर्शन हुआ है। ये उपग्रह हमारे दूरसंचार, दूरदर्शन, मौसम एवं संसाधन सर्वेक्षण कार्यक्रमों के विकास के लिए महत्वपूर्ण होंगे। वर्ष 1996-97 में इनसैट-2 डी और 1997-98 में इनसैट-2 ई एवं आई.आर.एस.-1 डी छोडने की हमारी योजना है। हमने अपने इनसैट वर्ग के उपग्रहों को छोड़ने के लिए जियोसिंक्रोनस उपग्रह प्रक्षेपण यान के विकास में भी अच्छी प्रगति की है।

इस वर्ष देश का ककरापार स्थित दसवां परमाणु शक्ति रिएक्टर संतोषजनक ढंग से स्थापित हो गया है, और इसने कार्य करना शुरू कर दिया है। ट्राम्बे में स्थित रिसर्च रिएक्टर पूरे देश में 300 से अधिक चिकित्सा संस्थानों में निदान एवं उपचार के लिए 60,000 से अधिक किट उपलब्ध करा चुका है।

भारत के पड़ोस के कुछ भागों में वर्ष 1995-96 में सुरक्षा की दृष्टि से अनिश्चितता रही है। पाकिस्तान का अत्याधुनिक हथियार और यूरेनियम संवर्धन संबंधी प्रौद्योगिकी प्राप्त करने का लगातार प्रयास करना हमारे लिए गंभीर चिन्ता का विषया बना हुआ है। पाकिस्तान के इन प्रयासों से हमारे क्षेत्र में तनाव बढ़ता है, और इससे हथियारों की होड़ शुरू हो सकती है। हमें पूरा विश्वास है कि हमारी सशस्त्र सेनाएं राष्ट्र की सुरक्षा करने में पूर्णतः सक्षम हैं। फिर भी इस संबंध में सरकार इनकी क्षमता बनाए रखने के लिए कृत संकल्प है। इस संदर्भ में मुझे विश्वास है कि माननीय सदस्यगण भी हमारी सशस्त्र सेनाओं की कर्त्तव्यनिष्ठा और समर्पण की भावना के लिए उनकी सराहना करेंगे।

रक्षा अनुसंधान में कार्यरत हमारे वैज्ञानिकों के एकीकृत प्रयासों से ही हल्का लडाकू विमान नवम्बर, 1995 में राष्ट्र को सौंपा गया। इस वर्ष के अंत तक इसकी परीक्षण उड़ानें शुरू हो जाएंगी। मुख्य लडाकू टैंक अर्जुन को सेना में शामिल करने की दृष्टि से पूर्णतः विकसित कर लिया गया है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने बहु-आयामी प्रौद्योगिकी का उपयोग करके उच्चकोटि के सुपर कम्प्यूटर का विकास किया है, जिससे बहुत लम्बे समय से महसूस की जा रही आवश्यकता की पूर्ति हुई है, तथा इस क्षेत्र में हम और अधिक आत्मनिर्भर हुए हैं।

विदेश नीति के मामले में पड़ोसी राष्ट्रों से हमारे संबंध और प्रगाढ़ हुए। भूटान के साथ हमारे पारम्परिक निकट संबंध इस वर्ष और अधिक घनिष्ठ हैं। नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री श्री मनमोहन अधिकारी की अप्रैल, 1995 में की गई भारत की यात्रा और वर्तमान प्रधानमंत्री श्री शेर बहादुर देऊबा की इस माह के शुरू में की गई यात्रा से आपसी समझ और अधिक बढ़ी है। प्रधानमंत्री ने अप्रैल, 1995 में मालदीव में इंदिरा गांधी स्मृति अस्पताल का उद्घाटन किया। यह उस देश के साथ मैत्री और सहयोग की हमारी प्रतिबद्धता का सबूत है। श्रीलंका के साथ हमारे संबंध सौहार्द और विश्वास पर आधारित हैं। बंगलादेश के साथ हमारे व्यापार संबंधों में सुधार हुआ है। साथ ही दोनों देशों के लोगों के बीच आपसी संपर्क बढ़ा है। चीन के साथ लगातार उच्च स्तर पर बातचीत से हमारे संबंधों

में गतिशीलता बनी हुई है। हमारे प्रयासों से दक्षिण एशिया में, केवल पाकिस्तान को छोड़कर, अन्य सभी पड़ोसी देशों के साथ हमारे संबंध अच्छे हुए हैं। हम पाकिस्तान सरकार से आग्रह करते हैं कि वह भारत के साथ टकराव का रास्ता छोड़कर सभी अनसुलझे मामलों को सुलझाने के लिए शिमला समझौते के अनुसार द्विपक्षीय वार्ता की हमारी पेशकश पर रचनात्मक रवैया अपनाए।

पिछले वर्ष 7 दिसम्बर, 1995 से दक्षिण एशिया अधिमान्य व्यापार करार के लागू हो जाने से 'सार्क' की प्रगति में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि जुड़ गयी। भारत, ईरान और तुर्कमेनिस्तान द्वारा पारगमन के बारे में त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर होना मध्य एशिया के साथ हमारे संपर्कों में वृद्धि की एक महत्वपूर्ण घटना थी। इससे वाणिज्यिक एवं अन्य सम्पर्कों के लिए भारत और मध्य एशिया के बीच सुगम जल-भूतल मार्ग स्थापित हो सकेगा। 'आसिआन' भारत को संवाद साझेदारी का पूर्ण दर्जा देने पर सहमत हो गया है। इससे भारत और 'आसिआन' के बीच बढ़ते हुए आपसी हितकारी संपर्कों का पता चलता है।

रूसी संघ के साथ हमारा संबंध घनिष्ठ बना रहा। इस देश के साथ आर्थिक, सांस्कृतिक एवं अन्य क्षेत्रों में सहयोग की और संभावनाओं का भी पता लगाया गया है। भारत-संयुक्त राज्य अमरीका संबंध, विशेषकर आर्थिक एवं वाणिज्यिक क्षेत्रों में और प्रगाढ़ हुए। माले, मारीशस, नामीबिया, जिम्बाब्वे, मिस्र, बुरकीना फासो और घाना की उच्चस्तरीय यात्राओं से अफ्रीकी महाद्वीप के इन देशों के साथ राजनीतिक एवं आर्थिक सहयोग को बढ़ावा मिला।

भारत अंतराष्ट्रीय मंचों पर मार्च, 1995 में डेनमार्क में आयोजित विश्व सामाजिक विकास शिखर सम्मेलन; अक्तूबर, 1995 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की 50वीं वर्षगांठ की विशेष स्मारक बैठक, और उसी माह कोलम्बिया में आयोजित किए गये 11वें गुटनिरपेक्ष शिखर-सम्मेलन में विकासशील देशों की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य मामलों को उठाने में मुखर रहा है। निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण परमाणु निरस्त्रीकरण के उद्देश्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप व्यापक परमाणु परीक्षण निषेध संधि के बारे में की जा रही वार्ताओं में भारत सक्रिय रूप से भाग ले रहा है, परन्तु हम परमाणु अप्रसार संधि का अनिश्चित समय के लिए प्रभावी होना सार्वभौमिक परमाणु निरस्त्रीकरण के मार्ग में बाधक मानते हैं, क्योंकि इसका उद्देश्य परमाणु हथियार वाले राज्यों को परमाणु शस्त्रागारों को उचित ठहराना है।

चूंकि यह सत्र संक्षिप्त अवधि का होगा, अतः इस सत्र के दौरान केवल आवश्यक विधायी कार्यों पर ही विचार हो पाएगा। पिछले सत्र के बाद से प्रख्यापित कुछ अध्यादेश संसद के समक्ष प्रस्तुत किए जाएंगे। भारत सरकार के वित्तीय वर्ष 1996-97 के अनुमानित आय और व्यय का विवरण आपके समक्ष इस उद्देश्य से रखा जाएगा कि उस वर्ष की अवधि विशेष के लिए व्यय प्राधिकृत करते हुए लेखानुदान पारित किया जा सके। राष्ट्रपति शासन वाले राज्यों के संबंध में भी लेखानुदान पारित किया जाना आवश्यक होगा।

सरकार की नीतियों से देश की प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ है, जिससे जनता को अपनी क्षमता का अहसास हुआ है। देश की शक्ति उसकी सुदृढ़ अर्थव्यवस्था और उसकी जन-एकता में निहित है। पिछले साढ़े चार वर्षों के दौरान आपने जिस समर्पण की भावना, बुद्धिमता और दूरदर्शिता का परिचय दिया है, वह राष्ट्र को उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर करेगा।

मैं इस सत्र में आपका अपने कार्यों में जुटने का आह्वान करता हूं, और आपके प्रयासों की सफलता की कामना करता हूं।

जय हिन्द।

12.24 म.प.

निधन संबंधी उल्लेख

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, मुझे अत्यधिक दुःख के साथ हमारे दो साथियों सर्वश्री सूर्य नारायण सिंह तथा गोविन्द चन्द्र मुण्डा और हमारे छः भूतपूर्व साथियों अर्थात सर्वश्री हीरामाई, बेकिन परटिन, अमिया नाथ बोस, देव कान्त बरुआ, टी.एस. नेगी तथा पी.सी. सेठी तथा आंध्र प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री एन.टी. रामाराव के निधन के बारे में सभा को सूचित करना है।

श्री सूर्य नारायण सिंह बिहार के बलिया संसदीय क्षेत्र से वर्तमान लोकसभा के सदस्य थे। वे वर्ष 1980-84 तथा 1989-91 के दौरान उसी निर्वाचन क्षेत्र से सातवीं तथा नौवीं लोक सभा के भी सदस्य थे।

इससे पूर्व, वर्ष 1977-79 के दौरान वे बिहार विधान सभा के भी सदस्य रहे थे।

एक महान स्वतंत्रता सेनानी, श्री सिंह ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, श्री सिंह एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद् तथा एक प्रमुख मजदूर नेता थे। उन्होंने स्कूल, कालेज तथा पुस्तकालय खोलने में पहल की। वर्ष 1987-88 के दौरान बाढ़ तथा भूकम्प राहत कार्यों में वे सक्रिय रूप से संबद्ध थे। श्री सिंह ने गरीबों तथा भूमिहीनों में अतिरिक्त भूमि बंटवाने के लिए कार्य किया था।

एक सक्रिय संसदविज्ञ के रूप में श्री सिंह ने विभिन्न संसदीय तथा विभिन्न मंत्रालयों की सलाहकार समितियों में कार्य किया।

श्री सूर्य नारायण सिंह का 8 फरवरी, 1996 को नई दिल्ली में 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

श्री गोविन्द चन्द्र मुंडा उड़ीसा में क्योंझर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से वर्तमान लोकसभा के सदस्य थे। वे वर्ष 1977-79 तथा 1989-91 के दौरान उसी संसदीय क्षेत्र से छठी तथा नौवीं लोक सभा के भी सदस्य थे।

इससे पूर्व, वे वर्ष 1952 से 1977 तक उड़ीसा विधान सभा के सदस्य रहे थे और वर्ष 1967-70 के दौरान राज्य मंत्रिमण्डल में उपमंत्री के रूप में कार्य किया था।

इस सभा में अपनी सदस्यता के दौरान, उन्होंने विभिन्न संसदीय तथा सलाहकार समितियों के सदस्य के रूप में कार्य किया।

एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता, श्री मुंडा ने अपने क्षेत्र के गरीब तथा दलित लोगों के उत्थान के लिए कठिन परिश्रम किया और सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में गहन रुचि दिखायी।

उन्होंने उड़ीसा साहित्य पर जागरण तथा कुछ अन्य पुस्तकें भी लिखीं।

श्री गोविन्द चन्द्र मुंडा का 19 फरवरी 1996 को 66 वर्ष की आयु में क्योंझर गढ़, उड़ीसा में निधन हो गया।

श्री हीरा भाई 1977-79 तथा 1989-91 के दौरान राजस्थान की बांसवाड़ा संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से छठी तथा नौवीं लोकसभा के सदस्य थे।

इससे पूर्व, वे 1957-72 के दौरान राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे थे।

व्यवसाय से कृषक श्री हीरा भाई ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था। एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता, श्री हीरा भाई को बंधुवा मजदूरी के उन्मूलन तथा मद्य निषेध को लागू करने के लिए आंदोलनों में भाग लेने के लिए कई बार जेल भेजा गया था। उन्होंने पंचायती राज को बढ़ावा देने के लिए निरंतर संघर्ष किया।

श्री हीरा भाई का 73 वर्ष की आयु में 25 दिसम्बर, 1995 को बांसवाड़ा के निकट ककनबनी में निधन हो गया।

श्री बाकिन परतिन अरुणाचल प्रदेश में अरुणाचल पूर्व संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से 1977-79 के दौरान छठी लोक सभा के सदस्य थे। वे अरुणाचल विधान सभा के भी सदस्य थे।

श्री परतिन ने अपना राजनैतिक जीवन बहुत छोटी आयु में प्रारम्भ किया था, जब वे विद्यार्थी ही थे। उन्होंने 1975-77 के दौरान सियांग परिषद के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया था। उन्होंने विभिन्न पदों पर रहते हुए अपने गृह राज्य की भी सेवा की। उन्होंने दलितों के उत्थान तथा प्रौढ़ शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए कठिन परिश्रम किया।

श्री बाकिन परतिन का 53 वर्ष की आयु में 5 जनवरी, 1996 को गुवाहाटी में निधन हो गया।

श्री अमिय नाथ बोस पश्चिम बंगाल में आरामबाग संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से 1967-70 के दौरान चौथी लोकसभा के सदस्य थे।

व्यवसाय से वकील, श्री अमिय नाथ बोस, जो नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के निकट संबंधी थे, आजाद हिन्द फौज से सक्रिय रूप से संबद्ध थे। वे 1942-44 के दौरान लंदन में कौंसिल फार इंटरनेशनल रिकॉगनीशन ऑफ इण्डिपैंडेंस के सचिव तथा 1945-46 के दौरान पश्चिम बंगाल की आई.एन.ए. समिति के महासचिव थे। वे नेताजी अनुसंधान ब्यूरो के संस्थापक सदस्य तथा नेताजी हॉल सोसाइटी, कलकत्ता के महासचिव थे।

उन्होंने व्यापक रूप से यात्रा की थी। श्री बोस की रक्षा, विदेश नीति तथा आर्थिक योजना में विशेष रुचि थी।

श्री अमिय नाथ बोस का 81 वर्ष की आयु में कलकत्ता में 26 जनवरी, 1996 को निधन हो गया।

श्री देव कान्त बरुआ 1949-50, 1950-52, 1952-57 तथा 1977-79 के दौरान क्रमशः विधान सभा, अंतरिम संसद, तथा असम में नवगांव संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से पहली तथा छठी लोकसभा के सदस्य थे। वे वर्ष 1973-77 के दौरान राज्यसभा के सदस्य भी रहे थे और 1973-74 के दौरान केन्द्रीय मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री के रूप में कार्य किया। 1957-72 के दौरान वे असम विधान सभा के सदस्य थे और राज्य सरकार में मंत्री के रूप में कार्य किया था।

उन्होंने फरवरी, 1971 से फरवरी 1974 तक बिहार के राज्यपाल के रूप में भी कार्य किया था।

श्री बरुआ, जिन्होंने एक सक्रिय राजनैतिक जीवन व्यतीत किया, भारत के स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेते हुए कई बार जेल गये।

व्यवसाय से पत्रकार, वे दो दैनिक समाचार पत्रों अर्थात **दैनिक असमिया** तथा **नतुन असमिया** के सम्पादक थे। उन्होंने असमी में कविताओं की एक पुस्तक भी लिखी।

उन्होंने व्यापक भ्रमण किया। श्री बरुआ, 1954-1955 तथा 1974 में संयुक्त राष्ट्र संघ और न्यूजीलैंड में आयोजित राष्ट्रमंडल सम्मेलन के लिए भारतीय शिष्टमंडल के एक सदस्य थे।

श्री बरुआ असम में विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक संस्थाओं से संबद्ध थे। वे गुवाहाटी तथा विश्व भारती विश्वविद्यालयों के कोर्टस के सदस्य तथा 1964-68 के दौरान असम सोसाइटी आफ कल्चरल स्टडीज तथा असम पब्लिकेशन बोर्ड के अध्यक्ष थे।

श्री देव कान्त बरुआ का 82 वर्ष की आयु में 28 जनवरी, 1996 को नई दिल्ली में निधन हो गया।

श्री टी.एस. नेगी 1977-79 तथा 1980-84 के दौरान उत्तर प्रदेश के टिहरी गढ़वाल संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से छठी तथा सातवीं लोकसभा के सदस्य थे।

इससे पूर्व, वे 1950-52 तथा 1962-67 के दौरान दो अवधियों के लिए उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे थे। वे भूतपूर्व टिहरी राज्य की विधान सभा के भी सदस्य थे।

व्यवसाय से एक वकील, श्री नेगी एक प्रसिद्ध सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने भूतपूर्व टिहरी राज्य के लोगों की दशा सुधारने के लिए कठिन परिश्रम किया था।

एक सक्रिय सांसद, श्री नेगी विभिन्न संसदीय समितियों के सदस्य थे। उन्होंने संचार मंत्रालय की सलाहकार समिति में भी कार्य किया था।

श्री टी.एस. नेगी का 73 वर्ष की आयु में नरेन्द्र नगर, टिहरी गढ़वाल में 8 फरवरी, 1996 को निधन हो गया।

श्री पी.सी. सेठी 1967-70, 1971-72, 1980-84 तथा 1984-89 के दौरान इंदौर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से क्रमशः चौथी, पांचवीं, सातवीं तथा

आठवीं लोकसभा के सदस्य थे। वे 1961-64, 1964-67 तथा 1976-80 के दौरान तीन अवधियों के लिए राज्य सभा के भी सदस्य थे। उन्होंने केन्द्रीय मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री के रूप में कार्य करने से पूर्व उपमंत्री तथा राज्य मंत्री के रूप में भी कार्य किया और पैट्रोलियम, रसायन तथा उर्वरक, रेल, गृह तथा योजना जैसे महत्वपूर्ण विभागों का कार्य भार संभाला। वर्ष 1972-75 के दौरान उन्होंने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में भी कार्य किया था।

वह एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे, 1942 में कालेज का बहिष्कार करने के बाद, वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े।

वह एक कुशल संसद्‌विज्ञ और अनुभवी राजनेता थे। श्री सेठी ने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के विभिन्न क्षेत्रों में देश की विशिष्ट सेवा की।

उन्होंने व्यापक भ्रमण किया, उन्होंने कई अंतराष्ट्रीय सम्मेलनों और संगठनों जैसे सितम्बर, 1969 में बारबाडोस में राष्ट्रमंडल के वित्त मंत्रियों के सम्मेलन, 1970 में सिओल के एशिया विकास बैंक की बैठक में भारत का प्रतिनिधित्व किया, वे विक्टोरिया, वैनकोवर द्वीप, कनाडा में आयोजित कोलम्बो योजना सम्मेलन के भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेता थे। उन्हें एशिया विकास बैंक, मनीला और अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक में भारत के गवर्नर के रूप में भी नामित किया गया था।

श्री सेठी, जिनकी खेलों और सांस्कृतिक क्रियाकलापों में गहरी रुचि थी, ने मध्य भारत कला परिषद और मध्य प्रदेश ग्राम और खादी उद्योग के सदस्य के रूप में कार्य किया।

श्री पी.सी. सेठी का निधन 76 वर्ष की आयु में 21 फरवरी, 1996 को बंगलौर में हुआ।

मैं, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री, श्री एन.टी. रामाराव के दुखद निधन की सूचना भी सभा को देता हूं।

श्री रामाराव ने अपना जीवन एक फिल्म अभिनेता के रूप में शुरू किया और बाद में उत्कृष्ट अभिनेता बन गये। उनकी असाधारण अभिनय कला ने उन्हें एक सफल अभिनेता बना दिया। उनका फिल्मी जीवन लगभग 50 वर्षों की अवधि का रहा और उन्होंने 100 से भी अधिक फिल्मों में कार्य किया, जिनमें उनके योगदान से प्रत्येक फिल्म को काफी सफलता मिली।

उन्होंने अपना राजनैतिक जीवन 1982 में शुरू किया और 1983 में आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री बने और बाद में राष्ट्रीय नेता के स्तर तक पहुंच गये।

श्री रामाराव अपने राज्य के लोगों में अपने धर्म-निरपेक्ष विचारों और गरीब एवं दलितों के उत्थान के लिए लोकप्रिय थे।

श्री रामाराव का निधन 72 वर्ष की आयु में 18 फरवरी, 1996 को हैदराबाद में हुआ।

हम इन मित्रों के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं और मुझे विश्वास है कि यह सभा शोक संतप्त परिवारों को हमारी शोक संवेदनाएं पहुंचाने में मेरे साथ है।

प्रधानमंत्री (श्री पी.वी. नरसिंह राव) : अध्यक्ष महोदय, मैं बड़े व्यथित हृदय से इस सभा के वर्तमान सदस्य श्री सूर्य नारायण सिंह को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। श्री सिंह गरीबों और दलितों के कल्याण के लिए वचनबद्ध थे। वह एक मजदूर नेता थे, जिन्होंने श्रमिक वर्ग के अधिकारों के लिए कार्य किया। हमें उनकी कमी इस सभा में खलेगी।

मुझे यह जानकर भी दुख हुआ कि एक अन्य वर्तमान सदस्य श्री गोविंद चन्द्र मुंडा का निधन हो गया है। वह अनुसूचित जनजातियों के हिमायती थे और उन्होंने उड़ीसा साहित्य पर अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया। जनजातीय कल्याण के मामलों में उनकी बहुत रुचि थी।

श्री हीरा भाई एक स्वतंत्रता सेनानी थे और उन्होंने बंधुआ मजदूरी के उन्मूलन के लिए भी संघर्ष किया और उन्हें बंधुआ मजदूरों, मद्य-निषेध और पंचायती राज से संबंधित आंदोलनों में भाग लेने के लिए कई बार जेल की सजा झेलनी पड़ी।

श्री बाकिन परतिन ने अपना जीवन सरकार से शुरू किया, लेकिन अरुणाचल प्रदेश के लोगों की भलाई के लिए इसे जल्दी ही छोड़ दिया, उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा और कृषि के विकास में गहरी रुचि दिखाई।

श्री अमिय नाथ बोस एक प्रसिद्ध विधिवक्ता थे और उन्होंने ब्रिटेन में भारतीय कांग्रेसजनों को संगठित किया। वे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के भतीजे थे और आजाद हिन्द फौज से घनिष्ठ रूप से संबद्ध थे। वे नेताजी अनुसंधान ब्यूरो, कलकत्ता के संस्थापक सदस्य भी थे।

मैं श्री देव कान्त बरुआ के निधन पर भी गहरा शोक व्यक्त करता हूं और अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। वे एक सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और पत्रकार थे। वह एक बुद्धिजीवी थे, जिनका किताबों के प्रति रुचि और स्नेह था। उन्होंने कई पदों जैसे असम के मंत्री और केंद्रीय मंत्री और बिहार के राज्यपाल के रूप में श्रेष्ठतापूर्वक कार्य किया, मेरा उनसे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति का महासचिव होने के नाते विशेष लगाव था, जब वह इसके अध्यक्ष थे।

मैं श्री टी.एस. नेगी के निधन पर अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। वह टिहरी क्षेत्र के लोगों की सेवा के लिए समर्पित थे और उन्होंने उनके कल्याण के लिए कार्य किया।

मैं श्री पी.सी. सेठी के निधन पर भी गहरा दुख व्यक्त करता हूं। श्री सेठी एक स्वतंत्रता सेनानी और वयोवृद्ध नेता थे। वह एक योग्य और अनुभवी प्रशासक थे, जिन्होंने केन्द्र सरकार के कई विभागों का कार्यभार संभाला। जनवरी 1972 से दिसम्बर 1975 तक वे मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री थे।

श्री नन्दमुरि तारक रामाराव के निधन से हमने देश के राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षितिज में एक सबसे सजीव और सशक्त व्यक्तितव को खो दिया है। वे पूर्णरूपेण एक कर्मठ व्यक्ति थे। वह टाइटन की तेजी से उभरे और अपनी अमिट छाप छोड़ दी।

मैं व्यक्तिगतरूप से उन्हें 40 वर्षों से अधिक समय से जानता हूं और प्रशंसा के साथ उनकी धमाकेदार सफलता का अनुसरण किया।

राजनीतिक रूप से कठोर शब्द शैली, जो उनके पास प्राकृतिक रूप से और स्वतः प्राप्त थी, के बावजूद वह विचारवान और मित्रतापूर्ण थे। उन्होंने एक राजनीतिक दल का निर्माण किया, उसके प्रत्येक अवयव को आपस में जोड़ा और इसमें जान फूंकी तथा उसे जीवंत बनाए रखा।

तत्पश्चात् वह राष्ट्रीय स्तर पर एक विशाल मोर्चा के अध्यक्ष बने। इस असाधारण व्यक्ति और नेता के प्रति मैं अपना सम्मान व्यक्त करता हूं और शोक संतप्त परिवार को अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

महोदय, मैं इन सभी माननीय सदस्यों के निधन पर अपनी तथा संपूर्ण राष्ट्र की ओर से हार्दिक दुःख प्रकट करता हूं।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : अध्यक्ष महोदय, आपने और सदन के नेता ने जिन दिवंगत महानुभावों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की है, मैं भी अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि देना चाहता हूं।

श्री सूर्य नारायण सिंह और श्री मुंडा पिछले सत्र में हमारे साथ थे, आज नहीं है। यह क्रम इसी तरह चलता रहा है। श्री सिंह एक कर्मठ सदस्य के नाते और मुंडा अपने बहुरंगी व्यक्तित्व के नाते याद किये जाते रहेंगे।

मैं विशेष रूप से श्री देवकान्त बरुआ, श्री प्रकाश चन्द सेठी और श्री रामाराव जी का उल्लेख करना चाहूंगा। वैसे तो प्रायः सभी दिवंगत सदस्यों के साथ मुझे कभी इस सदन में और कभी दूसरे सदन में काम करने का अवसर मिलता रहा। उनकी स्मृतियां हम लोग अपने ह्रदय में संजोये रहेंगे।

श्री देव कान्त बरुआ एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। तीव्र राजनैतिक मतभेदों के बावजूद संस्कृति में, साहित्य में, ललित कलाओं में, उनकी जो अभिरुचि थी, एक परिष्कृत दृष्टिकोण था, इन मामलों में जो उनकी गहरी पैठ थी, वह सचमुच में भीड़ से अलग उनके व्यक्तित्व को एक गरिमा प्रदान करती थी।

श्री प्रकाश चन्द जी सेठी मध्य प्रदेश के सपूतों में एक थे। जमीन से उठ कर उन्होंने ऊंचाइयां प्राप्त कीं। शालीन, शिष्ट, मितभाषी, सब को साथ लेकर चलने की भावना से प्रेरित सेठी जी अनेक दायित्वों के निर्वाह के लिये मनोनीत हुए और उन्होंने उन उत्तरदायित्वों का भली-भांति पालन किया।

श्री रामाराव आंध्र राष्ट्र के नायक के रूप में उभरे। मैं 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग जानबूझकर कर रहा हूं, क्योंकि तेलगू में राज्य को राष्ट्र कहते हैं। किसी को भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये। मैं जब आंध्र में गया तो मैंने परिचय के समय आंध्र राष्ट्र नायकुलू सुना। आंध्र में रामाराव जी नायक के रूप में ही नहीं, महानायक के रूप में उभरे। राजनीति के रंगमंच पर उनका पदार्पण जितना नाटकीय था, विश्व के रंगमंच से उनका प्रस्थान भी उतना ही नाटकीय रहा। उन्होंने आंध्र की जनता के ह्रदय में अपने लिये जगह बनायी। हम लोगों को भी उनको निकट से देखने और उनके साथ काम करने का अवसर मिला था। उनके आकस्मिक देहावसान से उनके परिवार को और आंध्रवासियों को जो दुख हुआ, उसमें हम सहभागी हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक बार फिर सभी दिवंगत नेताओं के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी शोक संवेदनाएं उनके संतप्त परिवार तक पहुंचा दें।

[अनुवाद]

श्री श्रीकान्त जेना (कटक) : महोदय, मैं इस सभा के वर्तमान सदस्यों सर्वश्री सूर्य नारायण सिंह, गोविन्द चन्द्र मुंडा और इस महान सभा के अन्य सदस्यों के निधन पर अपनी संवेदनाएं व्यक्त करने में आपके साथ हूं, जो चौथी, छठी, सातवीं, आठवीं और नौवीं लोकसभा के सदस्य थे।

महोदय, जैसा कि आप जानते हैं, श्री गोविन्द चन्द्र मुंडा उड़ीसा से थे। मैं उन्हें पिछले 25 वर्षों से जानता हूं। वह वहां मंत्री, विधान सभा के सदस्य थे और तत्पश्चात् संसद सदस्य बने। वह क्योंझर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से चुने गये थे। हम सभी श्री मुंडा को एक अलग आदमी के रूप में जानते हैं। लेकिन जो लोग उड़ीसा के हैं, वे यह जानते हैं कि वह एक अच्छे व्यक्ति थे। वह एक सच्चे आदिवासी नेता थे। वे जनजातीय जनता के साथ घुले-मिले थे। उन्होंने न केवल अपने निर्वाचन क्षेत्र के लिए बल्कि उड़ीसा की जनजातीय जनसंख्या के लिए भी बहुत अधिक काम किया।

श्री एन.टी. रामाराव राष्ट्रीय मोर्चे के अध्यक्ष थे। उनके निधन से राष्ट्रीय मोर्चा और देश को भी भारी क्षति हुई है। मैं अपने दल की ओर से संवेदनाएं व्यक्त करता हूं और अनुरोध करता हूं कि हमारी संवेदनाएं शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचा दें।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : अध्यक्ष महोदय, अपने दल और स्वयं अपनी ओर से, मैं आपके और सभा के नेता तथा विपक्ष के नेता एवं श्री जेना द्वारा जो इस सभा में कहा गया है, उससे मैं खुद को सम्बद्ध करता हूं और इस सभा के और पिछली लोकसभा के हमारे साथियों के निधन पर हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं।

महोदय, कामरेड सूर्य नारायण सिंह ने दलितों, श्रमिक वर्ग और कृषकों की भलाई के लिए बहुत अधिक संघर्ष किया। वे जनता के व्यक्ति थे। हमारे देश के दलितों की दशा सुधारने के लिए उनका विशिष्ट योगदान हमेशा याद किया जायेगा।

महोदय, मुझे इस सभा के अन्य ख्यातिप्राप्त सदस्यों को जानने का अवसर प्राप्त था। श्री अमिय नाथ बोस इस सभा के प्रतिष्ठित सदस्य थे और एक सुप्रसिद्ध कानूनी विशेषज्ञ थे। उन्होंने नेताजी सुभाष बोस के संदेश को अनेक तरह से प्रचार-प्रसार करने में अपना योगदान दिया।

श्री देव कान्त बरुआ हम सब के बहुत प्रिय थे, उनके सौम्य स्वभाव और शालीन उपस्थिति से सभी प्रभावित थे।

श्री पी.सी. सेठी हम सब के प्रिय मित्र थे।

इस देश के राजनीतिक जीवन में श्री रामाराव के योगदान को महत्व देना उचित है और यह कुल मिलाकर देश के लिए क्षति है।

महोदय, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों को हमारी दुख और क्षति की भावना संप्रेषित की जाए।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (मिदनापुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं इस सभा के बहुत से भूतपूर्व और वर्तमान सहयोगियों के निधन पर अपने अन्य साथियों और विपक्ष के नेता के साथ गहरा शोक प्रकट करता हूं।

श्री सूर्य नारायण यादव, बल्कि मुझे उन्हें कॉमरेड सूर्यनारायण सिंह, कहना चाहिए, बिहार में हमारे दल के एक महत्वपूर्ण नेता थे। उन्होंने बेगूसराय जिले में निर्धन वर्ग के लोगों में अपने लिए बहुत ही सशक्त आधार बना लिया था और पिछले सोमवार अर्थात 19 तारीख को मुझे उनके गांव के समीप बुलाई गई एक विशाल जनसभा में भाग लेने का अवसर मिला था। यह एक शोक सभा थी और जो लोग उस सभा में आए थे, वे इस बात के साक्षी हैं कि गरीबों के दिल में उनके लिए विशेष स्थान था। वह समाज के सबसे निर्धन वर्ग के हितैषी थे। वह गरीबों के मसीहा थे और जीवनपर्यंत उनके लिए संघर्ष करते रहे।

महोदय, श्री मुंडा का व्यवहार प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सौम्य एवं सौहार्दपूर्ण था। हम इस सभा में हमेशा मुस्कराते रहने और हर एक का अभिवादन करने के लिए याद रखेंगे और मैं जानता हूं कि एक जनजातीय नेता के रूप में उन्होंने उड़ीसा राज्य के जनजातीय लोगों के लिए कार्य किया। मुझे उनके निधन से गहरा दुख पहुंचा है।

श्री अमिय नाथ बोस मेरे उस समय के सहयोगी थे, जब हम युद्ध से पहले कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र थे। श्री अमिय नाथ बोस नेताजी के भतीजे थे और शायद इसी कारण वह स्वतंत्रता संग्राम, विशेषरूप से आज़ाद हिन्द फौज की भूमिका से जुड़े हुए थे। मैं समझता हूं कि निधन संबंधी सूचना में इस बात का उल्लेख नहीं किया गया है कि वह कुछ समय तक वर्मा में हमारे राजदूत भी रहे। वह 1971 के चुनाव में मेरे प्रतिद्वन्द्वी भी थे। वह एक बहुत ही मिलनसार व्यक्ति और एक विद्वान वकील थे।

महोदय, मैं समझता हूं कि श्री देवकान्त बरुआ भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे। वह एक शिष्ट व्यक्ति थे। उन्हें साहित्य का वृहद ज्ञान था। उनके पास एक बहुत बड़ा पुस्तकालय था, जिसमें उनके मित्र इच्छा होने पर अध्ययन करने के लिए स्वतंत्र थे। उनकी संगीत, वास्तुशिल्प और संस्कृति के अनेक क्षेत्रों में गहरी रुचि थी। वह इन क्षेत्रों में बहुत निपुण थे। वह विदेशी सिगार के बहुत शौकीन थे। कुछ लोग जो सिगार पीना पसंद करते हैं—कुछ वर्ष पहले मैं भी उनमें से एक था, अब नहीं — उनकी उदारता का लाभ उठाते थे और उनसे सिगार पीते थे। वह बहुत मैत्रीपूर्ण और प्रसन्नचित व्यक्ति थे। कुछ राजनीतिक वक्तव्यों के कारण उनकी ख्याति को धक्का पहुंचा। मैं नहीं जानता हूं कि वे इसके प्रति गंभीर थे या नहीं। आज उनके निधन से ये सब बातें मन से मिट गई हैं।

श्री पी.सी. सेठी ने अनेक सरकारी पदों पर कार्य किया।

वह अनेक विभागों के मंत्री रहे। मुझे याद है कि वह बहुत ही योग्य मंत्री थे, चाहे उनके पास कोई भी विभाग रहा हो, और वे विपक्षियों सहित सभी सदस्यों से मैत्रीभाव रखते थे। वह बहुत परिश्रमी व्यक्ति थे और उनका जीवनवृत काफी लम्बा अनुकरणीय रहा है।

अतः मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी संवेदना शोकसंतप्त परिवारों तक पहुंचा दी जायं।

श्री एन.टी. रामाराव यद्यपि इस सभा के सदस्य नहीं थे, लेकिन वह अपनी ही तरह की एक महान विभूति थे। वह अपने राज्य में एक महान व्यक्तित्व थे और यदि वह जिन्दा रहते तो शायद राष्ट्र की राजनीति में एक बहुत बड़ी भूमिका निभाते। कोई भी व्यक्ति एक राजनीतिज्ञ, जिसने लोकतांत्रिक अधिकारों और मूल्यों के लिए दृढ़तापूर्वक संघर्ष किया और एक सिनेमा कलाकार के रूप में लाखों के दिलों में, जो उनकी फिल्में देखते थे, अपने लिए जगह बनाई, दोनों रूपों में उनके बहुमुखी प्रतिभा की सराहना ही कर सकता है।

मैं उनके निधन पर शोक प्रकट करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि शोकसंतप्त परिवार के सभी सदस्यों तक हमारी गहरी संवेदना पहुंचा दी जाएं।

श्री पी.जी. नारायणन (गोबिचेट्टिपालयम) : अध्यक्ष महोदय, मैं दिवंगत सदस्यों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। आठ सदस्य और एक भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री एन.टी. रामाराव अब हमारे बीच नहीं रहे। आठ सदस्यों में से श्री सूर्यनारायण सिंह और श्री गोविन्द चन्द्र मुंडा इस सभा के वर्तमान सदस्य थे। वे इस सभा के वरिष्ठ और वयोवृद्ध सदस्य थे। उन्होंने समाज के दलित और निर्धन लोगों के हित के लिए अनेक कार्य किए। अन्य सदस्यों द्वारा की गई सेवाएं भी महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने इस सभा की कार्यवाही में सक्रिय रूप से भाग लिया।

श्री एन.टी. रामाराव ने मुख्यमंत्री रहते हुए आंध्र प्रदेश की जनता के कल्याण के लिए अथक कार्य किया।

मैं अपनी तथा अपने दल आल इंडिया अन्ना डी.एम.के. की ओर से शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री शोभनाद्रीश्वर राव वाड्डे (विजयवाड़ा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने हमें इस देश के महान सपूतों में एक श्री एन.टी. रामाराव को श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर दिया।

महोदय, श्री एन.टी. रामाराव वह व्यक्ति थे, जो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की इस कामना में विश्वास रखते थे कि देश के प्रत्येक व्यक्ति को रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध की जानी चाहिए तथा उन्होंने इस कामना को पूरा करने का प्रयास भी किया। उन्होंने निर्धन व्यक्तियों को 2 रुपए प्रति किलाग्राम चावल उपलब्ध करवाने, उनके लिए स्थायी मकान बनाने तथा उनके सस्ती दरों पर कपड़ा उपलब्ध करवाने जैसी अनेक कल्याणकारी योजनाएं लागू कीं। नशीले पदार्थों के विरुद्ध व्यापक आंदोलन के परिणामस्वरूप तीसरी बार मुख्यमंत्री बनते ही उन्होंने आंध्र प्रदेश में पूर्ण मद्यनिषेध लागू किया। वह सच्चे लोकतंत्रवादी थे तथा उन्होंने समय पर पंचायत तथा सहकारी समितियों के चुनाव करवाए और पिछड़े वर्ग के लोगों तथा अल्पसंख्यकों को आरक्षण प्रदान किया।

अध्यक्ष महोदय, वह पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने देश में पहली बार आदर्श सहकारिता कानून पारित करवाया। उनके कार्यकाल के दौरान आंध्र प्रदेश में पूर्ण सांप्रदायिक सौहार्द था।

आपने ठीक ही कहा है कि उन्होंने सैकड़ों फिल्मों में काम किया और आने वाले समय में काफी लम्बे समय तक आंध्र प्रदेश और देश के लोगों के मन में उनकी छवि बनी रहेगी।

18 जनवरी को श्री एन.टी. रामाराव की मृत्यु से इस देश के गरीब लोगों ने अपना एक सच्चा मित्र खो दिया है।

विकास प्रक्रिया में गरीब लोगों के हितों और कल्याण की उपेक्षा न करते हुए अपनी ओर से बेहतरीन प्रयास करते हुए उनकी सरकार ने लोगों के मन में गहरी छाप छोड़ी है।

1.00 म.प.

मैं पुनः आपका धन्यवाद करता हूं। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि तेलगू देशम दल की ओर से श्री एन.टी. रामाराव और अन्य सदस्यों के परिजनों को हमारी संवेदनाएं पहुंचा दी जाएं।

श्री डी. वेंकटेश्वर राव (बापतला) : अध्यक्ष महोदय, 18 जनवरी, को श्री एन.टी. रामाराव के निधन से आंध्र प्रदेश के गरीब लोगों को गहरा धक्का पहुंचा है। वह ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने सत्ता में आने के बाद अपने राजनैतिक दर्शन का पालन किया। यद्यपि, उन्होंने बहुत धन कमाया फिर भी उन्होंने एक गरीब व्यक्ति की भांति अपना जीवन बिताया, क्योंकि वह एक गरीब परिवार के थे। मद्रास में रहते हुए उन्हें एक कप चाय के लिए मीलों जाना पड़ता था। ऐसी पृष्ठभूमि से और सिनेमा तथा वास्तविक जीवन से भी अपने अनुभव के बाद वह जब राजनीति के क्षेत्र में आए और सत्ता में आने पर उन्होंने गरीबों के लिए रोटी, कपड़ा और मकान के अपने दर्शन को मूर्त रूप दिया।

अपनी पृष्ठभूमि के साथ उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की, साथ ही उनके दल की गतिविधियां गरीब लोगों के कल्याण के लिए समर्पित थीं।

मुख्यमंत्री बनने के बाद भी उन्होंने सादा जीवन जिया, यदि कोई जाकर बनजारा हिल्स पर उनका घर देखे तो वह पाएगा कि यह एक साधारण सा घर है, जिसके चारों तरफ गरीबों की झोंपड़ियां हैं। कई बार वे फर्श पर भी सोया करते थे। यह उनका जीने का ढंग था। उन्होंने हमें, अपने अनुयायिओं को अंत तक लड़ने का उपदेश दिया। इससे मालूम पड़ता है कि वे किस तरह से उपदेश दिया करते थे और व्यवहार करते थे।

जब उन्होंने साहसपूर्वक राज्य में आवास योजना प्रारम्भ की और जब उन्होंने यह कहा कि प्रति वर्ष 2 लाख मकानों का निर्माण किया जायेगा, तो सभी उस पर हंसे थे। लेकिन अपने सात वर्षों के कार्यकाल में जब उन्होंने बारह लाख मकानों का निर्माण किया, अर्थात समस्त देश में बनाये गये मकानों की संख्या के बराबर, तो प्रत्येक ने इसकी प्रशंसा की। यह था राजनीति के प्रति उनका दृष्टिकोण। वास्तविक जीवन में भी, उन्होंने इसका व्यवहार किया था। उनके फिल्मी जीवन के दौरान भी, उन्होंने गरीब व्यक्ति के कई चरित्रों की भूमिका की थी। उस सभी अनुभव के साथ, उन्होंने आंध्र प्रदेश राज्य में गरीबों के लिए कार्य किया।

जब 18 जनवरी को उनकी मृत्यु हुई, तक हमने राज्य में गरीब लोगों को खाना खिलाने का आह्वान किया और राज्य के प्रत्येक गांव तथा प्रत्येक गली ने इस पर अनुकूल प्रतिक्रिया की और उन्होंने आंध्र प्रदेश राज्य में प्रत्येक स्थान पर गरीबों को भोजन कराया।

उन्होंने गरीब लोगों के दिलों में यह जगह बनाई। मैं अपनी एक छोटी सी घटना, अर्थात अपने परिवार के अनुभव, का वर्णन करता हूं। मेरी बेटी लगभग 11 वर्ष की है। एक वर्ष पूर्व, वह अपने जन्म दिन पर उनके पास गई और फिर उसकी मां, अर्थात, मेरी पत्नी उसको उनके पास ले गई और उसने अपनी बेटी से श्री एन.टी. रामाराव के पैर छू कर उनका आशीर्वाद लेने के लिए कहा। मेरी बेटी ने उनके पैर छूने से इन्कार कर दिया। बदले में, उसने कहा, "नहीं, मैं पैर नहीं छूती हूं।"

फिर उन्होंने अपनी बेटी से कहा : "उस पर दबाव न डालो। आप उसे बड़ी होने दें। वह अपनी भावनाओं को साहसपूर्वक व्यक्त कर सकती है। आप इस तरह के स्वभाव को प्रोत्साहित कीजिए, ताकि वह बड़ी होकर जीवन में सफल रहे।" फिर, केवल तीन दिनों तक वह वहां नहीं गई, उसके पश्चात, वह उनके पास पोंगल पर गई वे कुर्सी पर बैठे थे। उसने उनको एक मिठाई का डिब्बा दिया। उसने जाकर उनके पैर छूये। फिर वह अपनी मां के पास वापस आई और अपनी मां को बताया : "मां मैंने आज नाना जी के पैर छूये।" उसकी मां ने पूछा, "तुमने ऐसा क्यों किया।" फिर उसने कहा : "वे मुझे भगवान जैसे लगते हैं।" अतः, महोदय, इस तरह वे आंध्र प्रदेश में गरीबों के लिए भगवान हैं। जो वे विश्वास करते थे, उसका व्यवहार करते थे। उनके निधन से गरीबों को गहरा आघात लगा है।

इन कुछ शब्दों के साथ, मैं अपने नेता के प्रति सम्मान व्यक्त करता हूं और मैं श्री सूर्यनारायण सिंह, श्री गोविन्द चन्द्र मुंडा तथा अन्य जिनका निधन हो गया है, साथियों के लिए गहन संवेदना प्रकट करता हूं। मैं आपसे शोक संतप्त परिवारों के सदस्यों को मेरी संवेदनाएं भेजने का अनुरोध करता हूं।

श्री सैयद शहाबुद्दीन (किशनगंज) : अध्यक्ष महोदय, मैं आप के द्वारा, सदन के नेता तथा विपक्ष के नेता द्वारा हमारे साथी, जिनका निधन हो गया है, सभा के भूतपूर्व सदस्यों तथा महान नेता श्री एन.टी. रामाराव को दी गई श्रद्धांजलि तथा व्यक्त की गई भावनाओं के साथ हूं। महोदय, अब हमें इस सभा में श्री सूर्य नारायण सिंह की गंभीरता तथा श्री गोविन्द चन्द्र मुंडा की सौम्यता देखने को नहीं मिलेगी। महोदय, मैं सौभाग्य से थोड़े समय के लिए इन दिवंगत नेताओं के सम्पर्क में रहा हूं। मैं अमिय नाथ बोस के सम्पर्क में उस समय आया था, जब वे वर्मा में राजदूत थे, और मंत्रालय में काम करने के दौरान मुझे उनके पत्र देखने का अवसर मिला था। मैं राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए उनकी गहन चिंता और वर्मा के मित्र लोगों के साथ हमारे संबंधों को विकसित करने में उनकी रुचि से प्रभावित हुआ था।

महोदय, मैं श्री देवकान्त बरुआ को कई तरह से जानता था और मैं सभा में यह उल्लेख करना चाहता हूं कि उनके निधन से इस्लामी विद्वता

को बहुत हानि हुई है, क्योंकि बहुत कम लोगों को इस बात की जानकारी है कि उन्होंने बड़ी संख्या में पुस्तकें एकत्रित कीं, वे इस्लामिक दर्शन और इस्लामी संस्कृति के महान विद्वान थे। मेरे विचार से, वे हमारी धर्म-निरपेक्षता के प्रतीक थे।

महोदय, श्री पी.सी. सेठी से मेरी जान-पहचान तब हुई थी, जब वे नेल्ली नरसंहार के अंधकारपूर्ण काल में देश के गृह मंत्री थे और उन्होंने पीड़ित लोगों के प्रति जो मानवीय दृष्टिकोण अपनाया और उनके प्रति जो सहानुभूति और चिन्ता व्यक्त की, मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ था।

श्री एन.टी. रामाराव हमारे देश के महान नेता थे तथा हमारे देश के निर्माण में उनकी अहम् भूमिका थी। उनके जीवन के साथ ही एक अध्याय समाप्त हो गया है। उन्होंने न केवल आंध्र प्रदेश के, बल्कि समूचे राष्ट्र के नेता के रूप में देश की बड़ी सेवा की। उन्होंने हमें राष्ट्रीय एकता का मार्ग दिखाया और राष्ट्रीय मोर्चा के चेयरमैन के रूप में जनहित कार्य के लिए संघर्ष करना भी सिखाया। उनकी मृत्यु से जो खालीपन आ गया है, उसे भरा नहीं जा सकता।

महोदय, इन शब्दों के साथ, मैं सभी दिवंगत नेताओं के प्रति अपनी व्यक्तिगत श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और माननीय अध्यक्ष से निवेदन करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार के लोगों को मेरी अपनी और मेरी पार्टी की संवेदना से अवगत कराया जाये।

श्री याइमा सिंह युमनाम (आंतरिक मणिपुर) : महोदय, यदि मैं अपनी पार्टी की ओर से श्री गोविन्द चन्द्र मुंडा और श्री सूर्य नारायण सिंह के निधन पर दो शब्द नहीं कहूंगा तो मैं स्वयं को अकृतज्ञ कहलाऊंगा। श्री मुंडा और श्री सिंह हमारे साथ बैठते थे। ये हमारे बहुत ही प्रिय थे। अतः, मैं इस सदन के उन सभी नेताओं और श्री देवकांत बरुआ जो पूर्वोत्तर क्षेत्र के थे, के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करने में दूसरे माननीय सदस्यों के साथ स्वयं को सम्बद्ध करता हूं। हमें उन पर बड़ा गर्व था। मैं श्री एन.टी. रामाराव, जिनसे हमें बड़ी आशायें थी, के निधन पर हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं। अतः, इन शब्दों के साथ मैं आपसे निवेदन करता हूं कि शोक संतप्त परिवारों को हमारी संवेदनाओं से अवगत कराया जाये।

श्री चित्त बसु (बारसाट) : माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता और विपक्ष के गण्यमान्य नेताओं ने इस सदन के भूतपूर्व सदस्यों के निधन पर जो शोक व्यक्त किया है, मैं स्वयं को उसमें शामिल करता हूं। उनमें से मैं, विशेषकर श्री सूर्यनारायण सिंह का उल्लेख करना चाहूंगा, जिनके साथ कार्य करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वह जनता और कामगार वर्गों को संगठित करने में माहिर थे और महान लोकतंत्रवादी थे, जिन्होंने मेहनतकश लोगों को आजादी के सच्चे मार्ग की ओर अग्रसर किया।

महोदय, मैं श्री अमिय नाथ बोस के नाम का उल्लेख करने में विशेषतौर पर कृतज्ञ महसूस करता हूं। वह इस सभा के सदस्य थे और उन नवयुवकों में से थे, जिन्होंने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के पलायन में सहायता की थी। मुझे यह बताया गया है और सारा देश यह जानता है कि नैनी में नेताजी के पलायन की योजना बनाने में उनकी बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका थी और बाद में भी उन्होंने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के विचारों और कार्यों को लोकप्रिय बनाने की दिशा में अथक परिश्रम किया। इस प्रकार, उन्होंने हमारे देश के स्वतंत्रता आंदोलन में भी विशेष योगदान दिया।

अंत में, मैं स्वर्गीय श्री एन.टी. रामाराव के निधन पर उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करना चाहता हूं, जो आंध्र प्रदेश के महान व्यक्ति थे। उन्होंने आंध्र प्रदेश के लाखों लोगों के दिलों को जीता था। उनके निधन से आंध्र प्रदेश में जो स्थान खाली हुआ है, उसे भरना बहुत कठिन है। मुझे आशा है और विश्वास है कि उस राज्य के लोग श्री रामाराव की स्मृतियों और कार्यकलापों को संजोए रखने के लिए सही उपाय करेंगे।

[हिन्दी]

श्री पीयूष तीरकी (अलीपुरद्वार) : अध्यक्ष महोदय, प्रधानमंत्री जी ने और विरोधी दलों के नेताओं ने जिन नेताओं के निधन पर उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है, मैं भी उसमें अपने को शामिल करता हूं। विशेषकर गोविंद मुंडा, जो कि मेरे पास ही बैठते थे, और सूर्य नारायण सिंह जो यहां के सिटिंग मेम्बर थे वे भी हमारे बीच नहीं हैं। देवकान्त बरुआ जो कि जाने-माने नेता थे और किसी समय उन्होंने 'इंदिरा इन इंडिया और इंडिया इज इंदिरा' का नारा दिया था। वे भी आज इस दुनिया में नहीं हैं। श्री पी.सी. सेठी के साथ भी हमारी जान-पहचान थी। एन.टी.आर. सारे देश के नेता थे और पूरे भारत को एकाकार देखने की उनकी इच्छा थी। मैं अपनी पार्टी आर.एस.पी. की तरफ से और अपनी तरफ से इन दिवंगत नेताओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी संवेदना उनके शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचा दें।

श्री इब्राहिम सुलेमान सेट (पोन्नानी) : स्पीकर साहब आपने और इस हाउस के मुखतलिफ दलों के लीडर्स ने हमारे बहुत से साथियों के हमसे हमेशा के लिए जुदा हो जाने पर गमो-अलम का इजहार किया है। मैं भी आप सबका साथ देने के लिए यहां खड़ा हुआ हूं। इन लोगों में दो साथी ऐसे थे, जो कल तक हमारे साथ थे, लेकिन आज नहीं है। जैसे वाजपेयीजी ने कहा दुनिया का दस्तूर यही है कि बहुत आगे गये और बाकी तैयार बैठे हैं। ये दोनों साथी ऐसे थे, जिन्होंने मुल्क की बड़ी खिदमत की है। बहुत से ऐसे साथी भी हमारे साथ नहीं रहे जो इस सदन के सदस्य नहीं थे। उन्होंने भी मुखतलिफ मैदानों में मुल्क की खिदमत की है। आज हम उनको याद करते हैं और अपने गमो-अलम के साथ करते हैं। जहां तक श्री बरुआ जी का ताल्लुक है, वह एक अजीम इंसान थे, बड़े काबिल इंसान थे, खुशखलफ इंसान थे और मुझे उनके साथ करीबी ताल्लुक रखने का हमेशा मौका मिला है। आपके सामने कहा गया, शहाबुद्दीन साहब ने कहा कि वह इस्लामी तारीख, इस्लामी तहजीब से बहुत गहरी दिलचस्पी रखते थे। वह कांस्टीटुएन्ट असेम्बली में भी थे और यहां पर वजीर भी रहे हैं। इसके साथ-साथ मैं यहां पर एन.टी. रामाराव जी का भी जिक्र करूंगा। वह तो एक अजीम इंसान थे। वह सियासतदान भी, आयद भी और अदाकार भी थे। मैं उनको करीब से जानता हूं। इन्तखाबात से पहले

मेरा हैदराबाद जाना हुआ था। वहां पर बहुत अजीमोशान रैली हुई थी सिंहगर्जना रैली, ...(**व्यवधान**) प्रजागर्जना रैली हुई थी। मैंने देखा कि वहां पर हजार नहीं बल्कि लाखों इंसान थे। इससे साबित होता था कि वह गरीब अवाम से बड़ी मौहब्बत करते थे। वह ऐसे इंसान थे, जो गरीबों के लिए जीते थे और ऐसे इंसान थे, जिनसे गरीब भी मौहब्बत रखते थे। वह अदाकार भी थे, सियासतदान भी, लीडर भी, चीफ मिनिस्टर भी, सब कुछ थे। यह हमारे मुल्क के लिए बड़ा भारी नुकसान है। मैं अपने गहरे रंजोगम का इजहार करता हूं और दरख्वास्त करूंगा कि उनके परिवारजनों तक हमारे इस जजबात को पहुंचा दें।

جناب ابراہیم سلیمان سیٹھ (پونانی) اسپیکر صاحب آپ نے اور اپنی ہاؤس کے مختلف دلوں کے لیڈرس نے ہمارے بہت سے ساتھیوں کے ہم سے ہمیشہ کے لئے جدا ہو جانے پر غم والم کا اظہار کیا ہے۔ میں بھی آپ سب کا ساتھ دینے کے لئے یہاں پر کھڑا ہوا ہوں۔ ان لوگوں میں دو ساتھی ایسے تھے جو کل تک ہمارے ساتھ تھے لیکن آج نہیں ہیں۔ جیسے واجپئی جی نے کہا دنیا کا دستور یہی ہے کہ بہت سے آگے گئے اور باقی تیار بیٹھے ہیں۔ یہ دونوں ساتھی ایسے تھے جنہوں نے اس ملک کی بڑی خدمت کی ہے۔ بہت سے ایسے ساتھی بھی ہمارے ساتھ نہیں رہے جو اس سدن کے سدسیہ نہیں تھے۔ انہوں نے بھی مختلف میدانوں میں ملک کی خدمت کی ہے۔ آج ہم ان کو یاد کرتے ہیں اور اپنے غم والم کے ساتھ کرتے ہیں۔

جہاں تک شری بروا جی کا تعلق ہے وہ ایک عظیم انسان تھے بڑے قابل انسان تھے، خوش خلق انسان تھے اور مجھے ان کے ساتھ قریبی تعلق رکھنے کا ہمیشہ موقع ملا ہے۔ آپ کے سامنے کہا گیا۔ شہاب الدین صاحب نے کہا کہ وہ اسلامی تاریخ تہذیب سے بہت گہری دلچسپی رکھتے تھے۔ وہ کانسٹی چیوٹ اسمبلی میں بھی تھے اور یہاں پر وزیر بھی رہے ہیں۔ اس کے ساتھ ساتھ ہمیں یہاں پر این ٹی راماؤ جن کا بھی ذکر کروں گا۔ وہ تو ایک عظیم انسان تھے۔ وہ سیاست داں بھی تھے اور ایک اداکار بھی تھے۔ میں ان کو قریب سے جانتا ہوں۔ انتخابات سے پہلے میرا حیدر آباد جانا ہوتا تھا۔ وہاں پر بہت عظیم الشان ریلی ہوتی تھی۔ سنگرجنا ریلی، پرجاگرجنا ریلی ہوئی تھی۔ میں نے دیکھا کہ وہاں پر ہزار نہیں بلکہ لاکھوں انسان تھے۔ اس سے ثابت ہوتا تھا کہ وہ غریب عوام سے بڑی محبت کرتے تھے۔ وہ ایسے انسان تھے جو غریبوں کے لئے جیتے تھے اور ایسے انسان تھے جس سے غریب بھی محبت رکھتے تھے، وہ اداکار بھی تھے اور سیاست داں بھی۔ لیڈر بھی، چیف منسٹر بھی۔ سب کچھ تھے، یہ ہمارے ملک کے لئے بڑا بھاری نقصان ہے۔ میں اپنے گہرے رنج و غم کا اظہار کرتا ہوں اور درخواست کروں گا کہ ان کے پریوار جنوں تک ہمارے ان جذبات کو پہنچا دیں۔

[अनुवाद]

श्री अर्जुन सिंह (सतना) : महोदय, आपकी अनुमति से मैं अपने उन दिवंगत साथियों के परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं जो कि आज हमारे बीच में नहीं हैं और अपने दिवंगत साथियों के बारे में आपने जो भावनाएं व्यक्त की हैं, मैं उनका समर्थन करता हूं-यह तो नियति का विधान है, जो टाले नहीं टल सकता।

महोदय, मैं विशेषरूप से श्री देवकान्त बरुआ जी का उल्लेख करना चाहूंगा। मेरे विचार से उनके व्यक्तित्व के बारे में काफी कुछ कहा जा चुका है और अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने तरीके से उनके संपर्क में आया है और उनके बारे में प्रत्येक के अपने-अपने संस्मरण हैं। यदि हम कुल मिलाकर देखें तो मैं कहूंगा कि वे भारतीय व्यक्ति का एक उत्कृष्ट नमूना थे। जब एक भारतीय हमारी सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा धार्मिक विरासत के संबंध में व्यापक रूप से सोचता है तो बरुआ जी का अद्वितीय व्यक्तित्व उभर कर सामने आता है।

महोदय, मुझे श्री पी.सी. सेठी के साथ दल में एक साथी के रूप में तथा उनके मंत्रिमंडल में, जब वे मुख्यमंत्री थे, एक मंत्री के रूप में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ था और तदन्तर मैं यह भी कहूंगा कि ऐसे अवसर भी आए जब मेरे और उनके विचारों में काफी मतभेद रहा। लेकिन उनमें उचित तथा अनुचित के बीच संतुलन स्थापित करने की असीम क्षमता थी। श्री सेठीजी सौम्य व्यक्तित्व के धनी थे। यहां तक कि वह व्यक्ति जो उनके बारे में गलत ख्याल रखता हो। उनका आलोचक हो अथवा उनसे बहुत नाराज हो, यदि वह उनके साथ पांच या दस मिनट भी रह जाता था तो उसके विचार बदल जाते थे।

मध्य प्रदेश राज्य के लिए उन्होंने अनेक क्षेत्रों में नये आयाम स्थापित किए और वह राज्य उन्हें न केवल मुख्यमंत्री के रूप में याद करेगा, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के रूप में याद करेगा, जिन्होंने मानवता की भावना से तथा समाज-सेवा की भावना से राज्य में प्रत्येक सुविधा प्रदान करने की कोशिश की, जो कि समाज के निम्नतम वर्ग तक पहुंची, ताकि वे यह महसूस कर सकें कि उनके लिए कुछ किया गया है।

यद्यपि श्री एन.टी. रामाराव से मैं एक दो बार मिला, परन्तु व्यक्तिगत रूप से उनके साथ कार्य करने का सुअवसर मुझे कभी प्राप्त नहीं हुआ। लेकिन कोई भी भारतीय इस बात से इंकार नहीं कर सकता कि वे अपनी रहस्यमय प्रतिमा व्यक्तित्व और दक्षता से राजनीतिक क्षितिज पर दैदीप्यमान नक्षत्र की तरह उभरे—पहले आंध्र प्रदेश में तथा तत्पश्चात् देश में। उन्होंने अपने पीछे एक समृद्ध तथा व्यापक विरासत छोड़ी है। जो उन सभी के लिए एक महान प्रेरणा स्रोत रहेगी, जो समाजसेवी के रूप में जन-सेवा, विशेषकर दलित वर्ग के लोगों की सेवा करना चाहते हैं।

महोदय, मैं आपके माध्यम से इन दिवंगत साथियों के परिवारों के प्रति संवेदना प्रेषित करना चाहता हूं, जिनका आपने निधन संबंधी उल्लेख में जिक्र किया है।

1.20-1/2 म.प.

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे।

1.21 म.प.

डबवाली त्रासदी के संबंध में उल्लेख

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों को स्मरण होगा कि 23 दिसम्बर, 1995 के मध्याह्न में हुई एक दुर्घटना ने हरियाणा में सिरसा ज़िले के डबवाली नगर के लोगों को स्तब्ध कर दिया था, जिसमें एक स्कूल समारोह में विध्वंसकारी अग्निकांड में 350 से अधिक लोगों का, जिनमें अधिकतर स्कूल के बच्चे थे, दुखद अंत कर दिया।

हम इस दुख की घड़ी में शोकसंतप्त परिवारों के साथ हैं।

सभा मेरे साथ प्रभावित परिवारों के प्रति गहरी शोक-संवेदना व्यक्त करेगी।

अब सदस्यगण उन दिवंगत व्यक्तियों के सम्मान में थोड़ी देर मौन खड़े होंगे।

1.21-1/2 म.प.

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे

1.22 म.प.

सदस्यों द्वारा त्यागपत्र

अध्यक्ष महोदय : मुझे सभा को सूचित करना है कि लोक सभा के निम्नलिखित सदस्यों ने पिछले सत्रावसान की अवधि के दौरान लोक सभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया है :

1. श्री राम पूजन पटेल
2. श्री लाल कृष्ण आडवाणी
3. श्री शरद यादव
4. श्री जी. माडे गौडा

मैंने उनका त्याग पत्र स्वीकार कर लिया है

...(**व्यवधान**)...

श्री राम नाईक (मुम्बई उत्तर) : महोदय, मंत्रियों के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं?

...(**व्यवधान**)...

अध्यक्ष महोदय : सभा कल 27 फरवरी, 1996 को 11 बजे म.पू. पर समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

1.23 म.प.

तत्पश्चात् लोक सभा मंगलवार, 27 फरवरी, 1996/8 फाल्गुन, 1917 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई